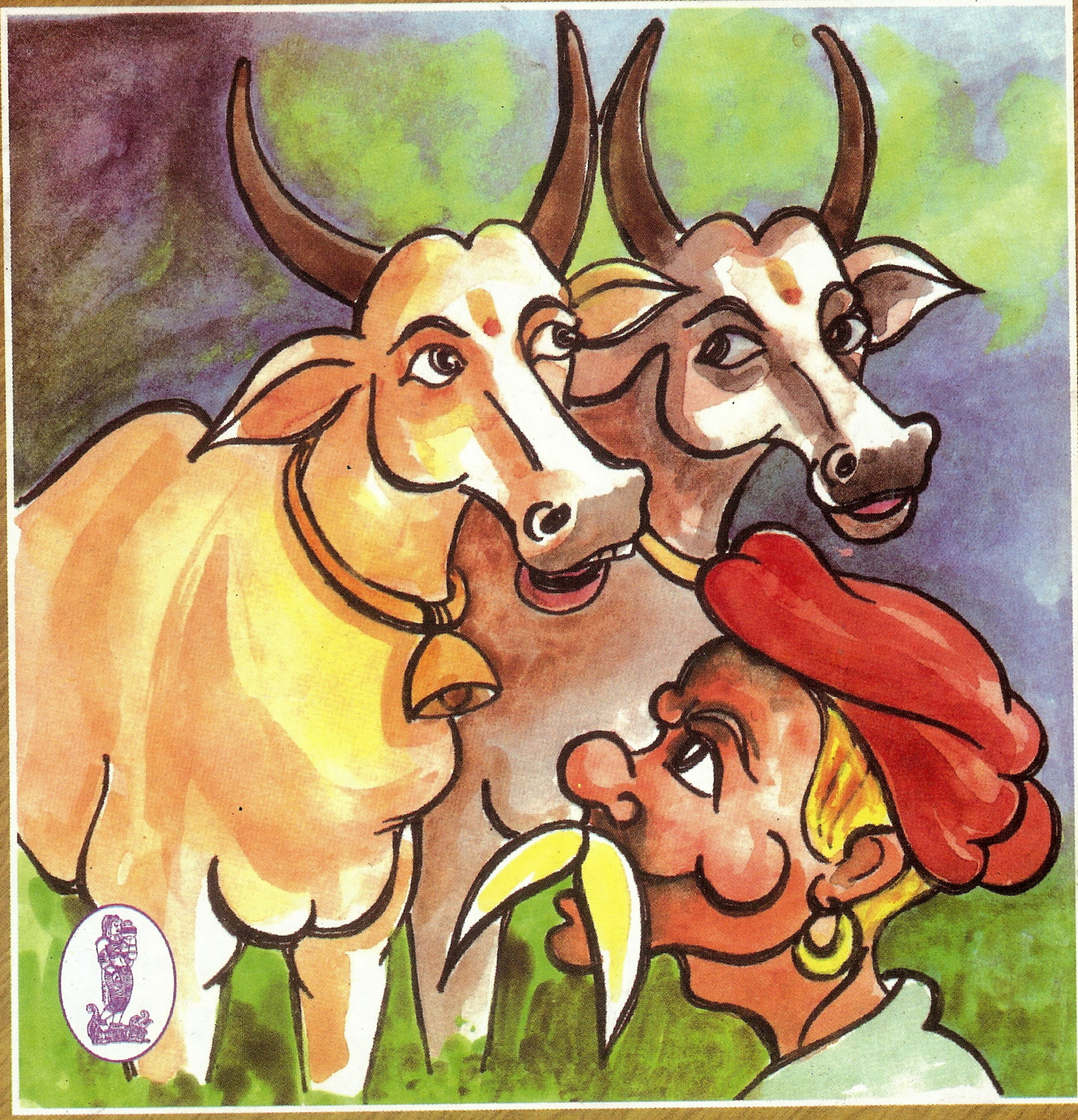
दो बैलों की कथा

प्रेमचंद



दो शब्द

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के कालजयी कथाकार हैं। विश्व साहित्य में वे भारतीय जीवन–दृष्टि और सार्थक रचनाशीलता के सर्वोत्तम हस्ताक्षर माने जाते हैं। जनपक्षधर, राष्ट्रभक्त व भविष्यद्रष्टा रचनाकार के रूप में प्रेमचंद अमर हैं। उनकी कृतियाँ व्यापक रूप से मानवीय मूल्यों को रेखांकित करते हुए समता, न्याय और स्वतंत्रता से युक्तसमाज का स्वप्न देखती हैं। मुंशी प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती के अवसर पर वर्ष 2006 में उनकी पुण्य स्मृति में कई प्रकाशन योजनाओं को मूर्त रूप दिया गया था। इनमें विशेषकर किशोरवय पाठकों के लिए प्रेमचंद की कुछ चर्चित कहानियों पर आधारित चित्रकथाएं प्रमुख थीं, ताकि हमारे समाज में सकारात्मक जीवन–मूल्यों का और अधिक विकास हो सके।

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के संयुक्त प्रयास से प्रकाशित 'प्रेमचंद कथा चित्रमाला' का पुनर्मुद्रण उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा किया जा रहा है। भारतीय समाज में प्रेमचंद साहित्य की सार्थकता सिद्ध करते हुए यह 'प्रेमचंद कथा चित्रमाला' अपनी उपयोगिता रेखांकित करेगी, ऐसी मंगल आशा है।

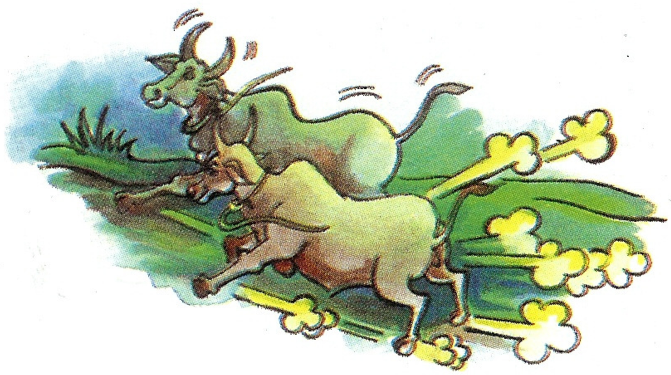
निदेशक
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
लखनऊ

प्रकाशक	:	निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन 6, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ
स्वत्वाधिकार	:	उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
सहयोग	:	संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ
प्रथम संस्करण	:	२००६ ई.
पुनर्मुद्रण	:	२०१६
प्रतियाँ	:	५०० (पाँच सौ)
मूल्य	:	३५.०० (पैंतीस रुपये मात्र)
संक्षिप्तीकरण व संयोजन	:	डॉ. सुशील सिद्धार्थ
चित्रांकन	:	सुधीर शर्मा
मुद्रक	:	प्रकाश पैकेजर्स, 257, गोलागंज, लखनऊ

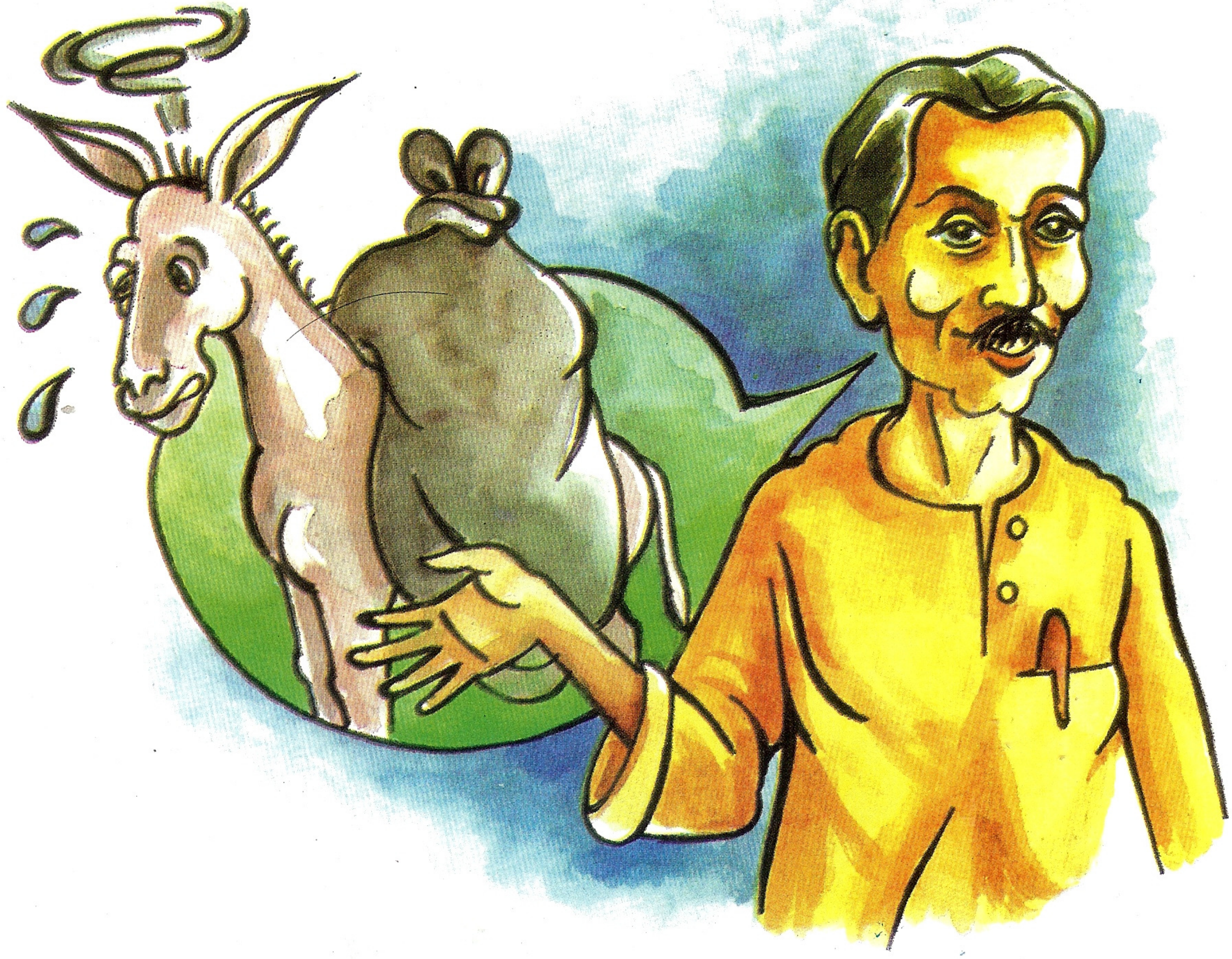
प्रेमचंद कथा चित्रमाला : नौ

दो बैलों की कथा

प्रेमचंद



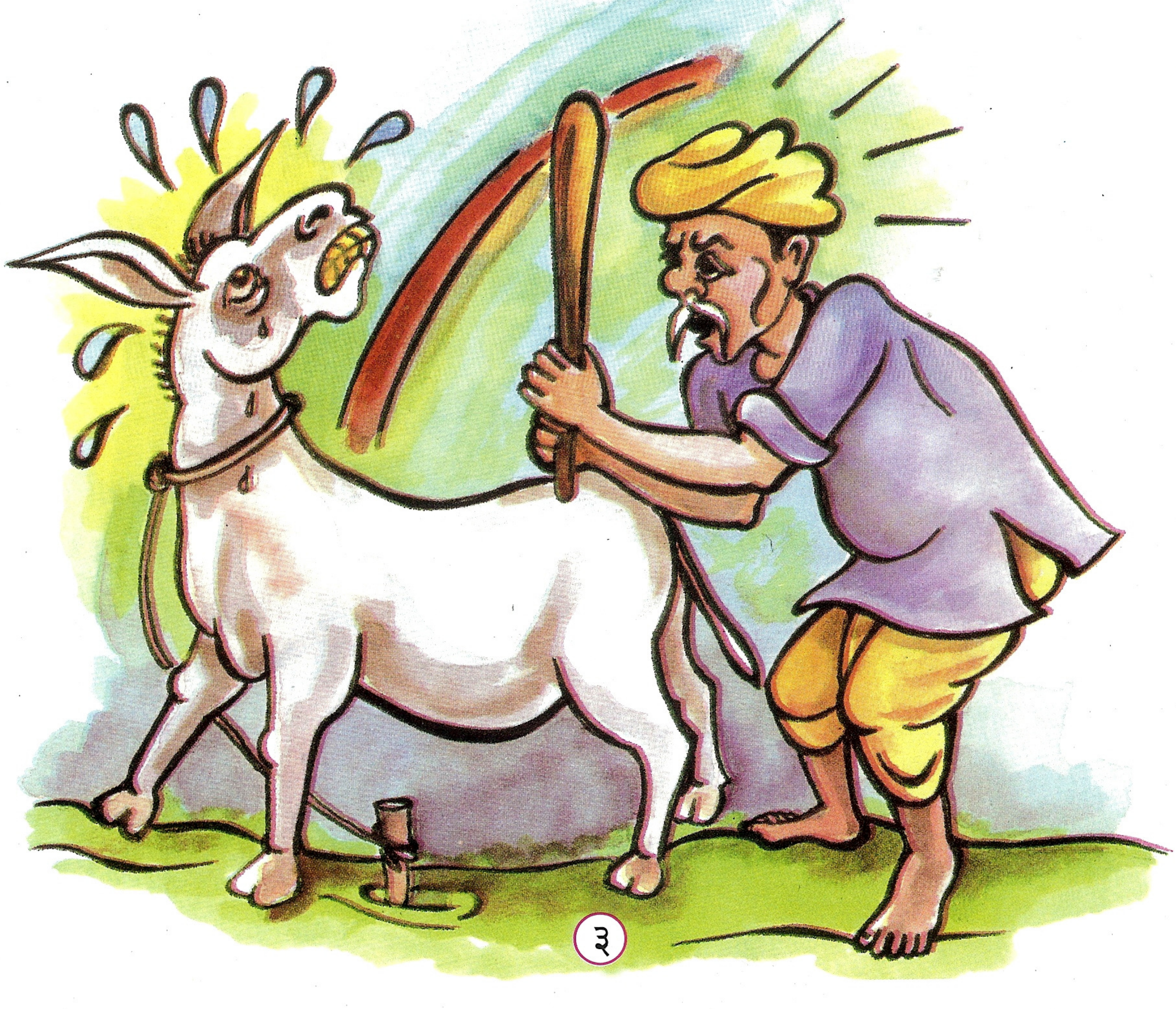
संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश
एवं
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

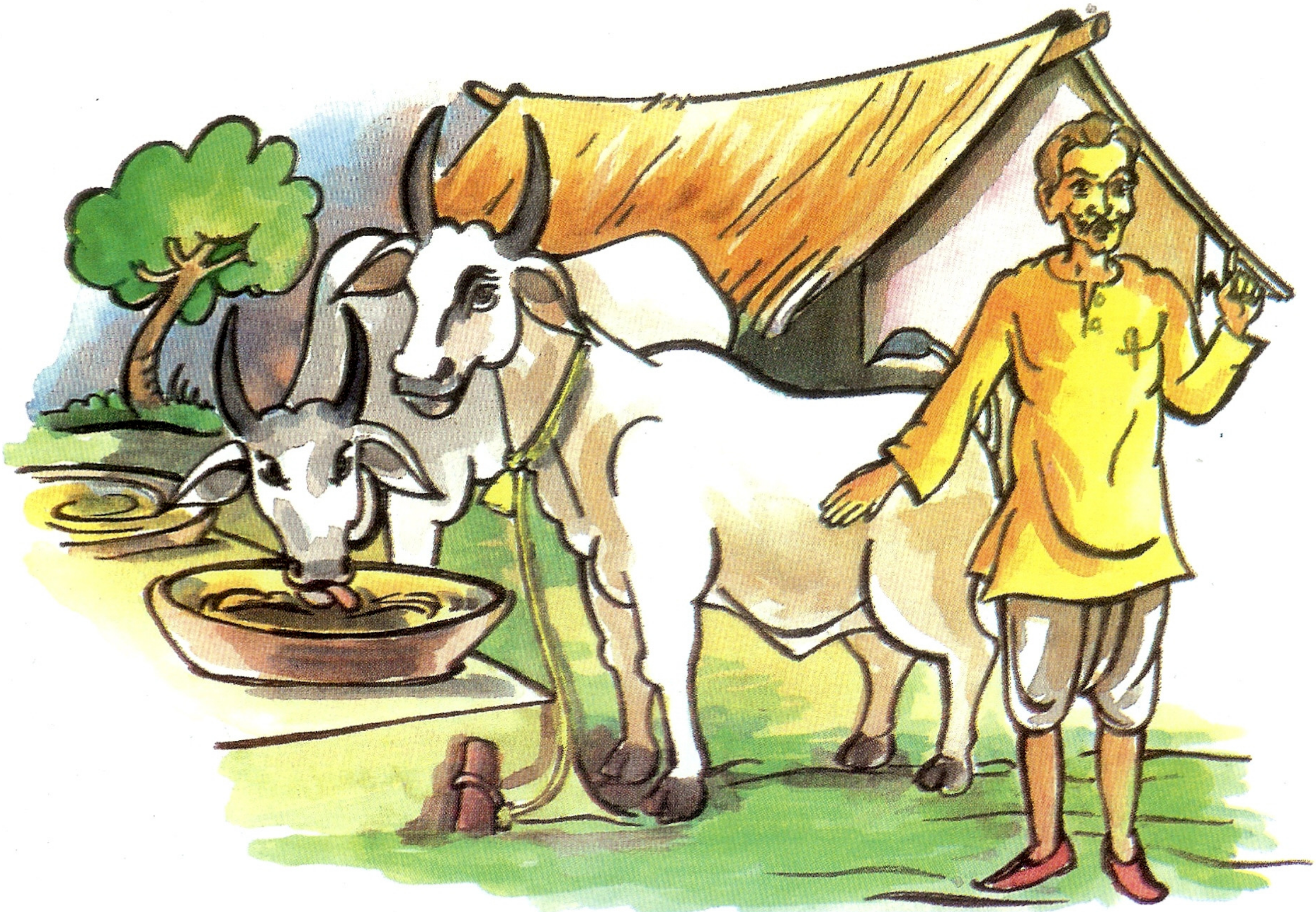


दो बैलों की कथा

जानवरों में गधा सबसे ज़्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है, हम जब किसी आदमी को पल्ले दरजे का बेवकूफ़ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्यायी हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवरी है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है; किन्तु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहे ग़रीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असन्तोष की छाया भी न दिखाई देगी। वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो; पर हमने तो उसे कभी खुश होते

नहीं देखा। उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दुःख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋषियों-मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गये हैं; पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सद्गुणों का इतना अनादर कहीं न देखा। कदाचित् सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है। देखिए न, भारतवासियों की अफ्रीका में क्यों दुर्दशा हो रही है? क्यों अमरीका में उन्हें घुसने नहीं दिया जाता? बेचारे शराब नहीं पीते, चार पैसे कुसमय के लिए बचाकर रखते हैं, जी तोड़कर काम करते हैं, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर ग़म खा जाते हैं फिर भी बदनाम हैं। कहा जाता है, वे जीवन के आदर्श को नीचा करते हैं। अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते, तो शायद सभ्य कहलाने लगते। जापान की मिसाल सामने है। एक ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया।



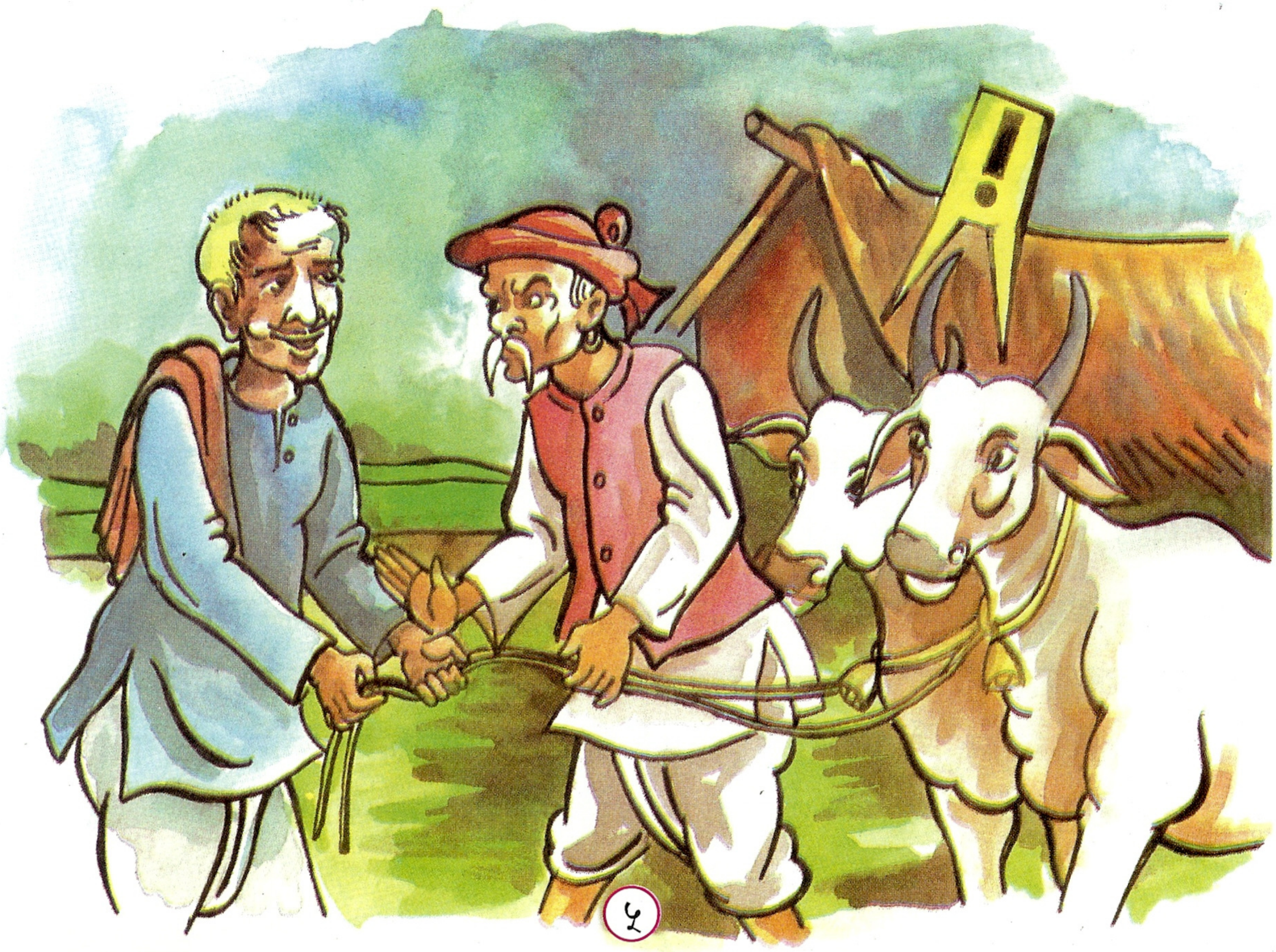


लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम गधा है, और वह है 'बैल'। जिस अर्थ में हम गधा का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते-जुलते अर्थ में 'बछिया के ताऊ' का भी प्रयोग करते हैं, कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे; मगर हमारा विचा ऐसा नहीं है। बैल कभी-कभी मारता भी है, कभी-कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है। और भी कई रीतियों से अपना असन्तोष प्रकट कर देता है; अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है।

झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती। दोनों पछाई जाति के थे-- देखने में सुन्दर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों से साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक दूसरे से मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे। एक दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करनेवाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक-दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला

लिया करते थे-- विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से जैसे दोनों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की-सी रहती है, जिस पर ज़्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता। जिस वक्त ये दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिये जाते और गरदन हिला-हिलाकर चलते उस वक्त हर एक की यही चेष्टा होती थी कि ज़्यादा-से ज़्यादा बोझ मेरी ही गरदन पर रहे। दिन-भर के बाद दोपहर या सन्ध्या को दोनों खुलते, तो एक दूसरे को चाट-चूटकर अपनी थकान मिटा लेते। नाँद में खली-भूसा पड़ जाने के बाद दोनों साथ उठते, साथ नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे। एक मुँह हटा लेता तो दूसरा भी हटा लेता था।

संयोग की बात है, झूरी ने एक बार गोई को ससुराल भेज दिया। बैलों को क्या मालूम वे क्यों भेजे जा रहे हैं। समझे, मालिक ने हमें बेच दिय। अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा कौन जाने पर झूरी के साले गया को घर तक गोई





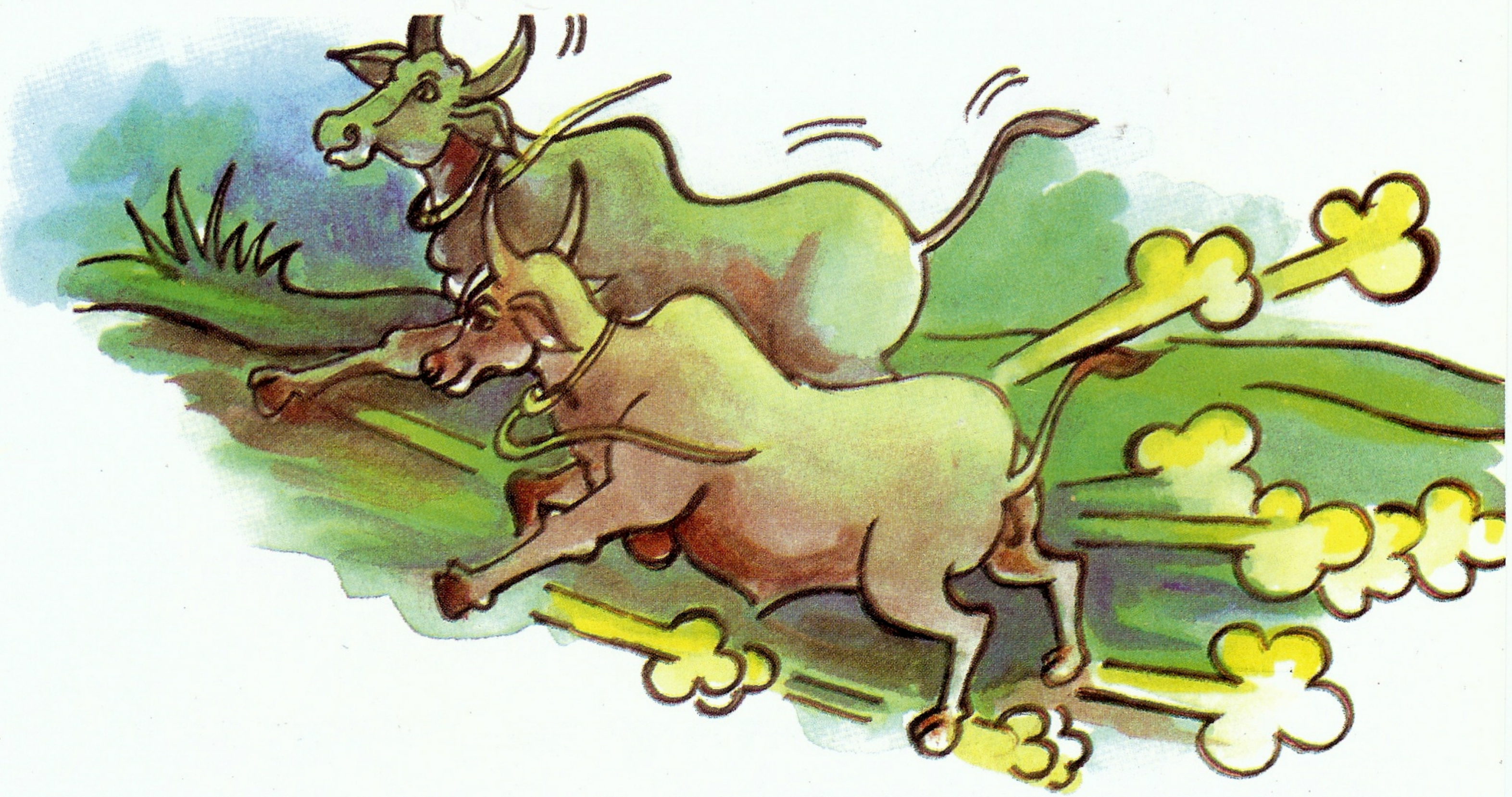
ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दायें-बायें भागते; पगहिया पकड़कर आगे से खींचता तो दोनों पीछे को जोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे करके हुँकरते। अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते-- तुम हम ग़रीबों को क्यों निकाल रहे हो? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था और काम ले लेते, हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कुबूल था। हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की। तुमने जो कुछ खिलाया वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस ज़ालिम के हाथों क्यों बेच दिया?

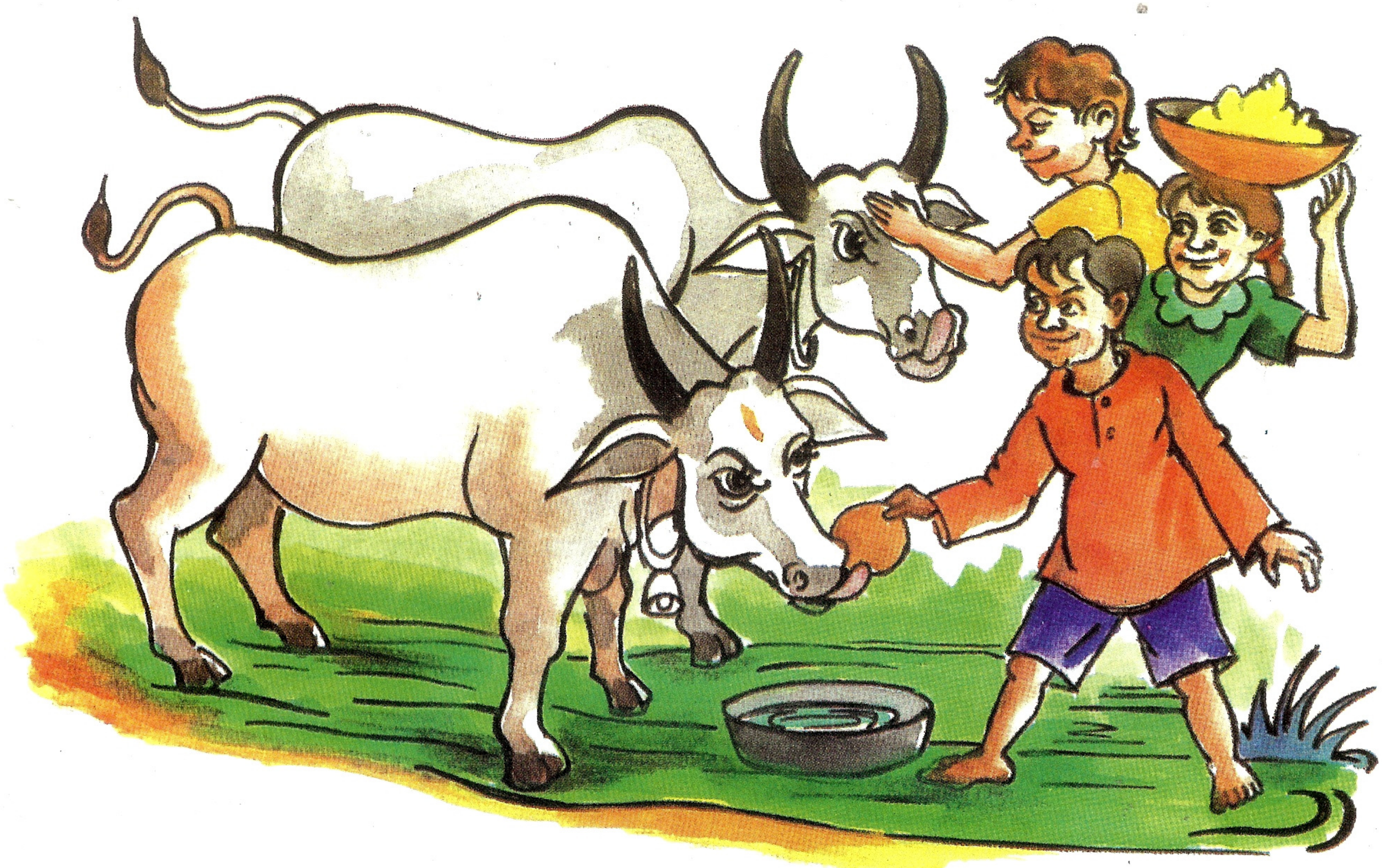
सन्ध्या समय दोनों बैल अपने नये स्थान पर पहुँचे। दिन-भर के भूखे थे, लेकिन जब नाँद में लगाये गये, तो एक ने भी उसमें मुँह न डाला। दिल भारी हो रहा था। जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था, वह आज उनसे छूट गया था। यह नया घर, नया गाँव, नये आदमी, उन्हें बेगानों से लगते थे।

दोनों ने अपनी मूक भाषा में सलाह की, एक-दूसरे को कनखियों से देखा और लेट गये। जब गाँव में सोता पड़ गया, तो दोनों ने ज़ोर मारकर पगहे तुड़ा डाले और घर की तरफ चले। पगहे बहुत मजबूत थे। अनुमान न हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड़ सकेगा; पर इन दोनों में इस समय दूनी शक्ति आ गयी थी। एक-एक झटके में रस्सियाँ टूट गयीं।

झूरी प्रातः सोकर उठा, तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं। दोनों की गरदनों में आधा-आधा गराँव लटक रहा है। घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं और दोनों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है।

झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्गद हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमालिंगन और चुम्बन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था।





घर और गाँव के लड़के जमा हो गये और तालियाँ बजा-बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी। बाल-सभा ने निश्चय किया, दोनो पशु-वीरों को अभिनन्दनपत्र देना चाहिए। कोई अपने घर से रोटियाँ लाया, कोई गुड़, कोई चोकर, कोई भूसी।

एक बालक ने कहा-- ऐसे बैल किसी के पास न होंगे।

दूसरे ने समर्थन किया-- इतनी दूर से अकेले चले आये।

तीसरा बोला-- बैल नहीं हैं वे, उस जनम के आदमी हैं।

इसका प्रतिवाद करने का किसी को साहस न हुआ।

झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी। बोली-- कैसे नमक-हराम बैल हैं कि एक दिन वहाँ काम न किया; भाग खड़े हुए।

झूरी अपने बैलों पर यह आक्षेप न सुन सका-- नमकहराम क्यों हैं? चारा-दाना न दिया होगा, तो क्या करते?

स्त्री ने रोब के साथ कहा-- बस, तुम्हीं तो बैलों को खिलाना जानते हो और तो सभी पानी पिला-पिलाकर रखते हैं।

झूरी ने चिढ़ाया-- चारा मिलता तो क्यों भागते?

स्त्री चिढ़ी-- भागे इसलिए कि वे लोग तुम जैसे बुद्धुओं की तरह बैलों को सहलाते नहीं। खिलाते हैं तो रगड़कर जोतते भी हैं। ये दोनों ठहरे काम-चोर, भाग निकले। अब देखूँ? कहाँ से खली और चोकर मिलता है; सूखे भूसे के सिवा कुछ न दूँगी, खायें चाहे मरें।

वही हुआ। मजूर को बड़ी ताकीद कर दी गयी कि बैलों को खाली सूखा भूसा दिया जाय।

बैलों ने नाँद में मुँह डाला तो फीका-फीका। न कोई चिकनाहट न कोई रस। क्या खायँ? आशा-भरी आँखों से द्वार की ओर तकने लगे।



झूरी ने मजूर से कहा-- थोड़ी सी खली क्यों नहीं डाल देता बे?

"मालकिन मुझे मार ही डालेंगी।"

"चुराकर डाल आ।"

"ना दादा, पीछे से तुम भी उन्हीं की सी कहोगे।"



दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और बैलों को ले चला। अबकी उसने दोनों को गाड़ी में जोता।

दो- चार बार मोती ने गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहा; पर हीरा ने संभाल लिया। वह ज़्यादा सहनशील था।

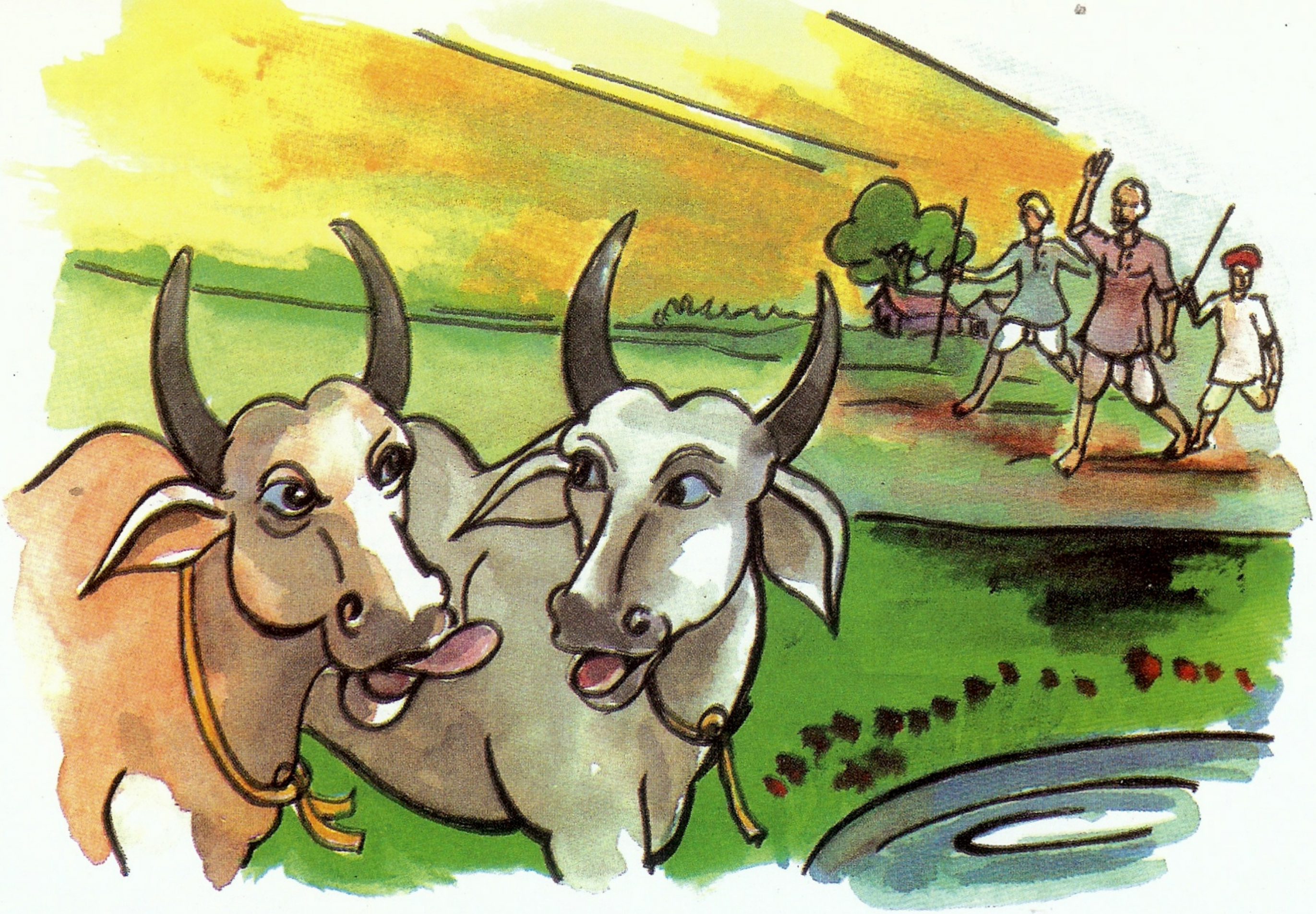
सन्ध्या-समय घर पहुँचकर उसने दोनों को मोटी रस्सियों से बाँधा और कल की शरारत का मज़ा चखाया। फिर वही सूखा भूसा डाल दिया। अपने दोनों बैलों को खली, चूनी सब कुछ दी।

दोनों बैलों का ऐसा अपमान कभी न हुआ था। झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे। यहाँ मार पड़ी। आहत-सम्मान की व्यथा तो थी ही, उस पर मिला सूखा भूसा।

नाँद की तरफ आँखें तक न उठायीं।

दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी। वह मारते-मारते थक गया; पर दोनों ने पाँव न उठाया। एक बार जब उस निर्दयी ने हीरा की नाक पर खूब डण्डे जमाये, तो मोती को गुस्सा काबू के बाहर हो गया। हल लेकर भागा। हल, रस्सी, जुआ, जोत, सब, टूट-टाट कर बराबर हो गया। गले में बड़ी-बड़ी रस्सियाँ न होतीं तो दोनों पकड़ाई में न आते।





हीरा ने मूक-भाषा में कहा-- भागना व्यर्थ है।

मोती ने उत्तर दिया-- तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी।

''अबकी बड़ी मार पड़ेगी।''

''पड़ने दो बैल का जन्म लिया है तो मार से कहाँ तक बचेंगे।''

''गया दो आदमियों के साथ दौड़ा आ रहा है। दोनों के हाथों में लाठियाँ हैं।''

मोती बोला-- कहो तो दिखा दूँ कुछ मजा मैं भी। लाठी लेकर आ रहा है।

हीरा ने समझाया-- नहीं भाई! खड़े हो जाओ।

''मुझे मारेगा, तो मैं भी एक-दो को गिरा दूँगा।''

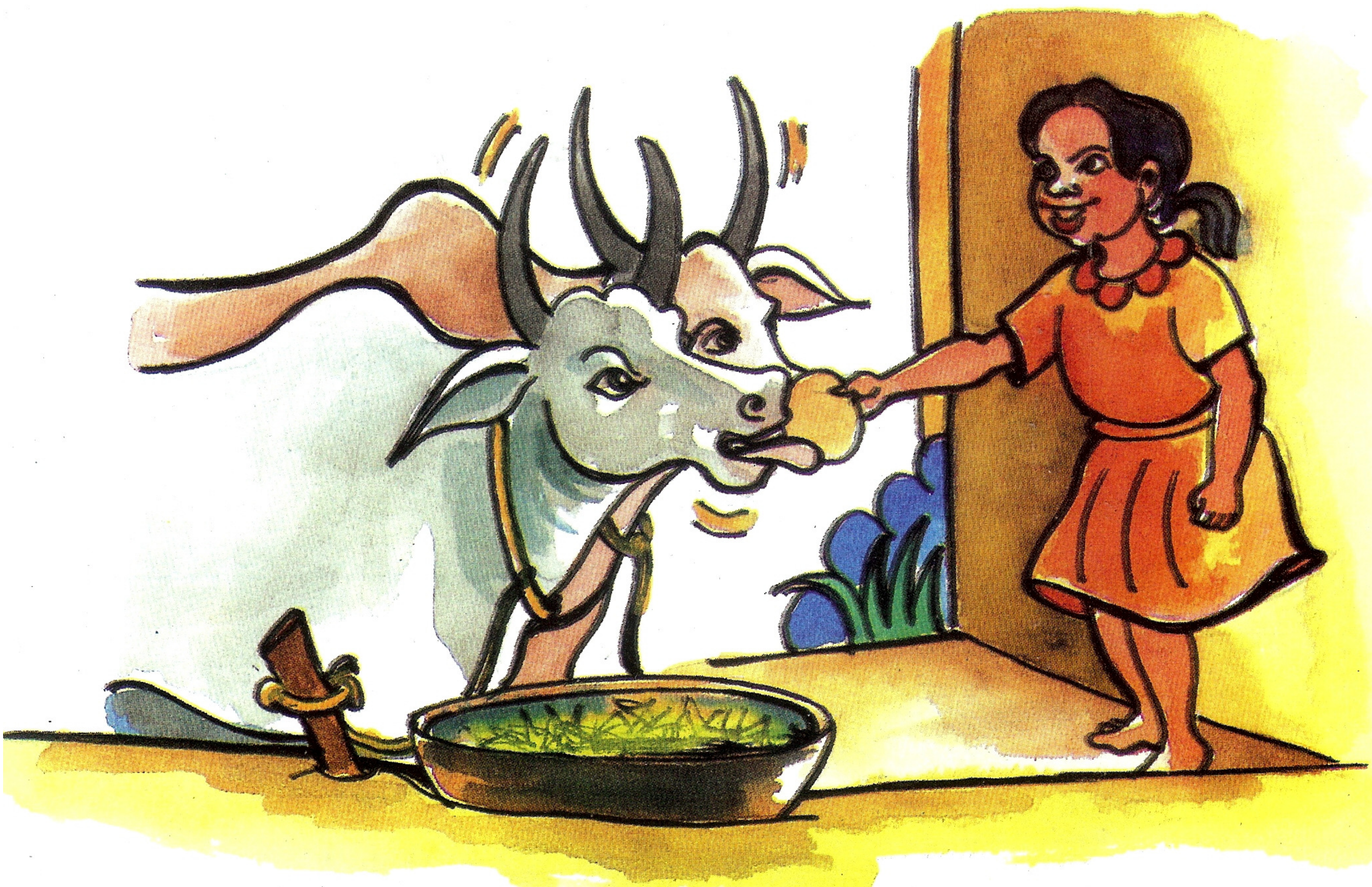
''नहीं। हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।''

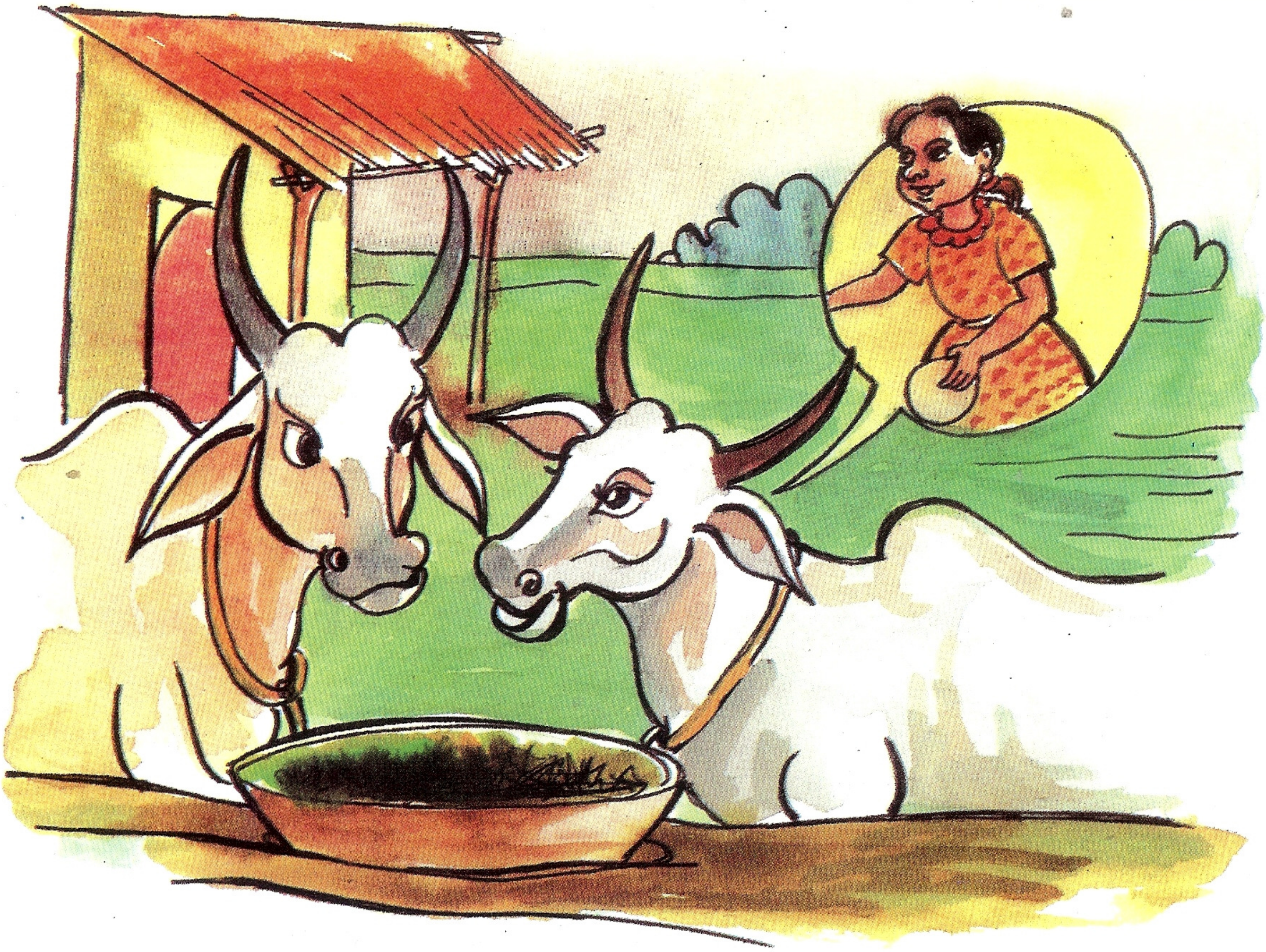
मोती दिल में ऐंठकर रह गया। गया आ पहुँचा और दोनों को पकड़कर ले

चला। कुशल हुई कि उसने इस वक्त मारपीट न की, नहीं तो मोती भी पलट पड़ता। उसके तेवर देखकर गया और उसके सहायक समझ गये कि इस वक्त टाल जाना ही मसलहत है।

आज दोनों के सामने फिर वही सूखा भूसा लाया गया। दोनों चुपचाप खड़े रहे। घर के लोग भोजन करने लगे। उस वक्त छोटी-सी लड़की दो रोटियाँ लिये निकली, और दोनों के मुँह में देकर चली गयी। उस एक रोटी से इनकी भूख तो क्या शान्त होती; पर दोनों के हृदय को, मानों भोजन मिल गया। यहाँ भी किसी सज्जन का वास है। लड़की भैरो की थी। उसकी माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ मारती रहती थी, इसीलिए इन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गयी थी।

दोनों दिन-भर जोते जाते, डण्डे खाते, अड़ते। शाम को थान पर बाँध दिये





जाते और रात को वही बालिका उन्हें दो रोटियाँ खिला जाती। प्रेम के इस प्रसाद की यह बरकत थी कि दो-दो गाल सूखा भूसा खाकर भी दोनों दुर्बल न होते थे, मगर दोनों की आँखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था।

एक दिन मोती ने मूक-भाषा में कहा-- अब तो नहीं सहा जाता हीरा!

''क्या करना चाहते हो?''

''एकाध को सींगों पर उठाकर फेंक दूँगा।''

''लेकिन जानते हो, वह प्यारी सी लड़की जो हमें रोटियाँ खिलाती है, उसी की लड़की है, जो इस घर का मालिक है। यह बेचारी अनाथ न हो जायगी?''

''तो मालकिन को न फेंक दूँ। वही तो उस लड़की को मारती है।''

''लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।''

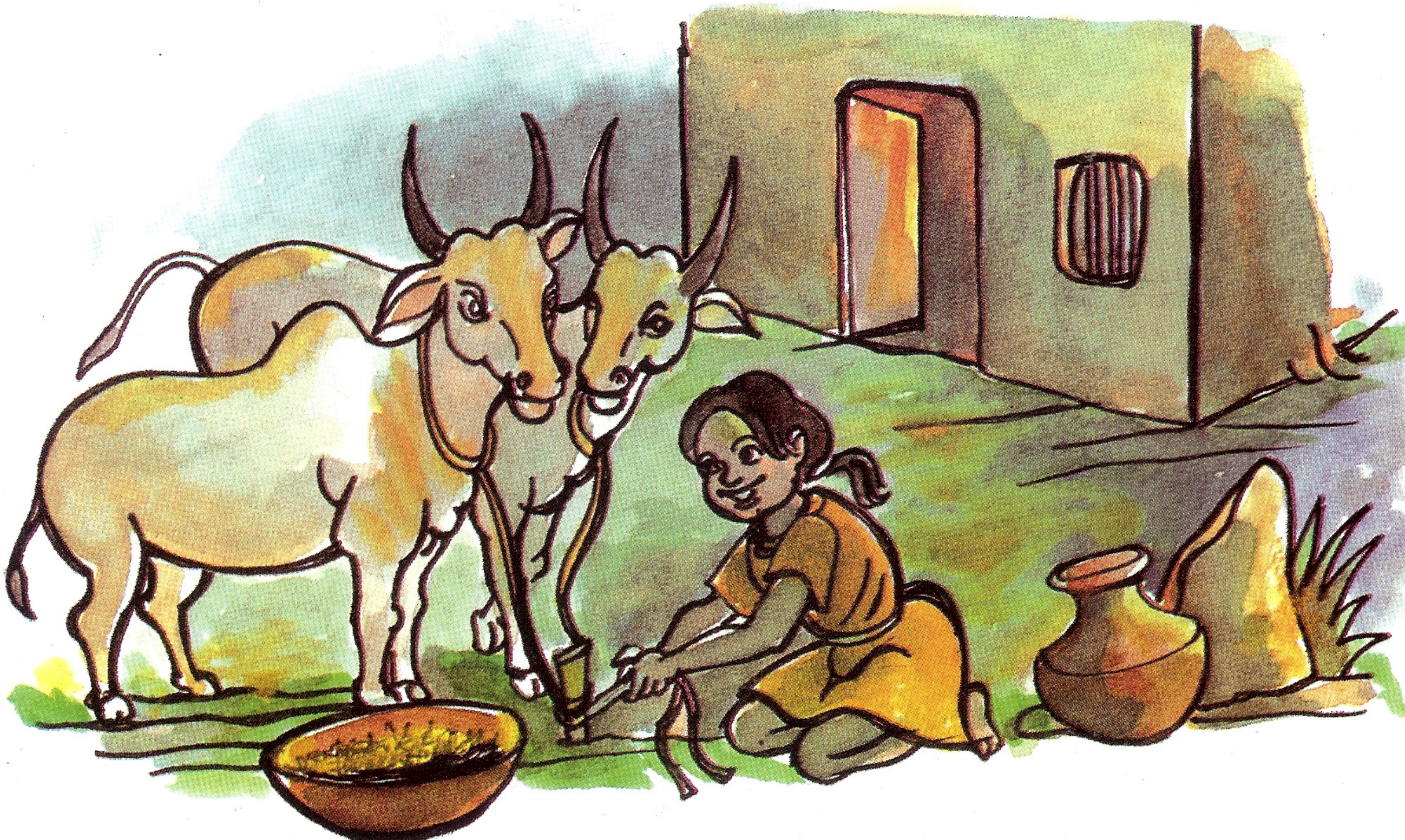
''तुम तो किसी तरह निकलने ही नहीं देते। बताओ, तुड़ाकर भाग चलें।''

"हाँ, यह मैं स्वीकार करता, लेकिन इतनी मोटी रस्सी टूटेगी कैसे?"

"इसका एक उपाय है। पहले रस्सी को थोड़ा-सा चबा लो। फिर एक झटके में जाती है।"

रात को जब बालिका रोटियाँ खिलाकर चली गयी, दोनों रस्सियाँ चबाने लगे, पर मोटी रस्सी मुँह में न आती थी। बेचारे बार-बार जोर लगाकर रह जाते थे।

सहसा घर का द्वार खुला और वही बालिका निकली। दोनों सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे। दोनों की पूँछें खड़ी हो गयीं। उसने उनके माथे सहलाये और बोली-- खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ, नहीं तो यहाँ लोग मार डालेंगे। आज घर में सलाह हो रही है कि इनकी नाकों में नथ डाल दी जायँ।



उसने गराँव खोल दिया, पर दोनों चुपचाप खड़े रहे।

मोती ने अपनी मूक भाषा में पूछा-- अब चलते क्यों नहीं?

हीरा ने कहा-- चलें तो लेकिन कल इस अनाथ पर आफत आयेगी। सब इसी पर सन्देह करेंगे। सहसा बालिका चिल्लायी-- दोनों फूफा वाले बैल भागे जा रहे हैं। ओ दादा! दोनों बैल भागे जा रहे हैं, जल्दी दौड़ो।

गया हड़बड़ाकर भीतर से निकला और बैलों को पकड़ने चला। वे दोनों भागे। गया ने पीछा किया। और भी तेज हुए। गया ने शोर मचाया। फिर गाँव के कुछ आदमियों को भी साथ लेने के लिए लौटा। दोनों मित्रों को भागने का मौका मिल गया। सीधे दौड़ते चले गये। यहाँ तक कि मार्ग का ज्ञान न रहा। जिस परिचित मार्ग से आये थे, उसका यहाँ पता न था। नये-नये गाँव मिलने लगे। तब दोनों एक खेत के किनारे खड़े होकर सोचने लगे, अब क्या करना चाहिए?



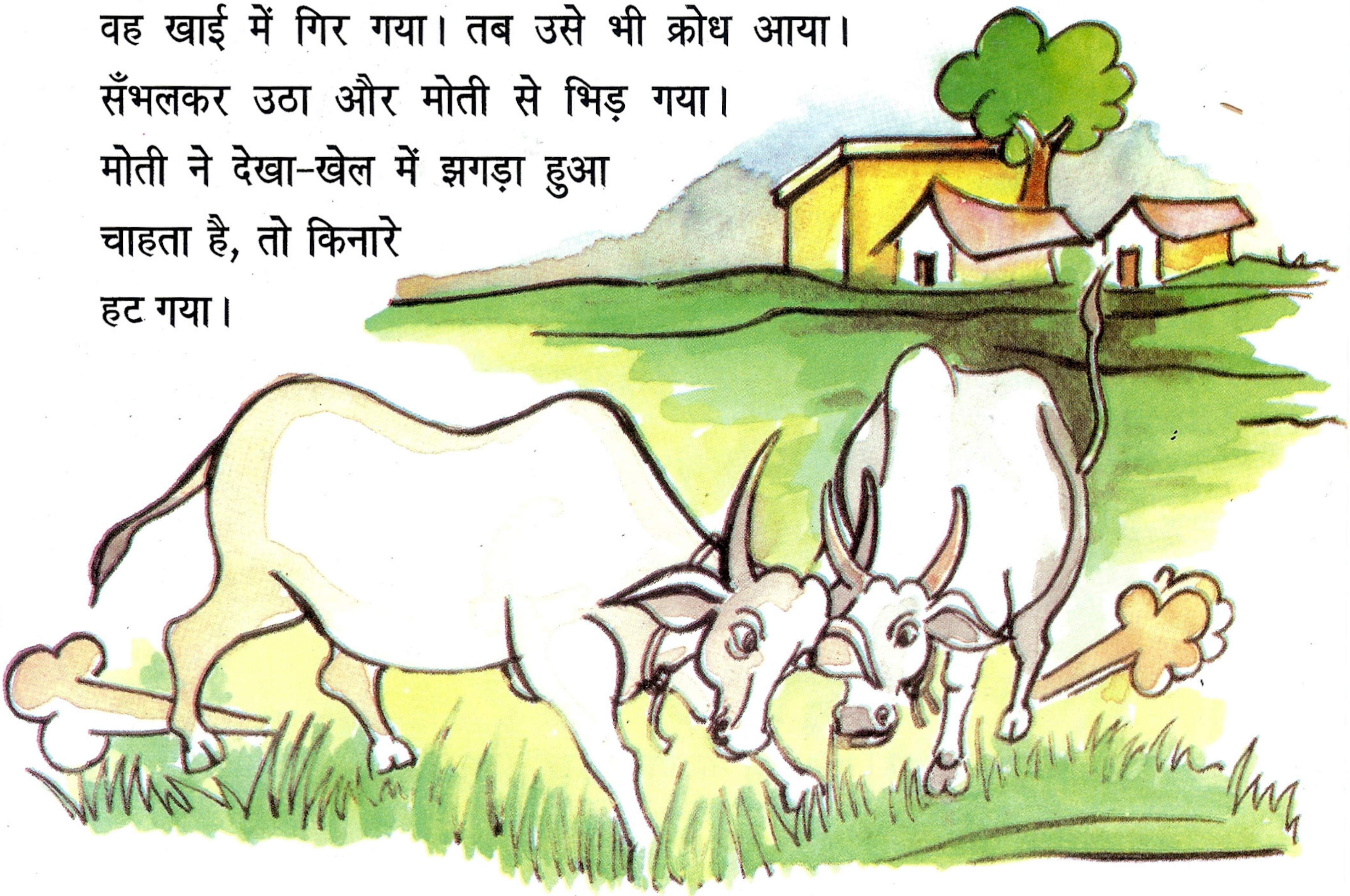
हीरा ने कहा-- मालूम होता है, राह भूल गये।

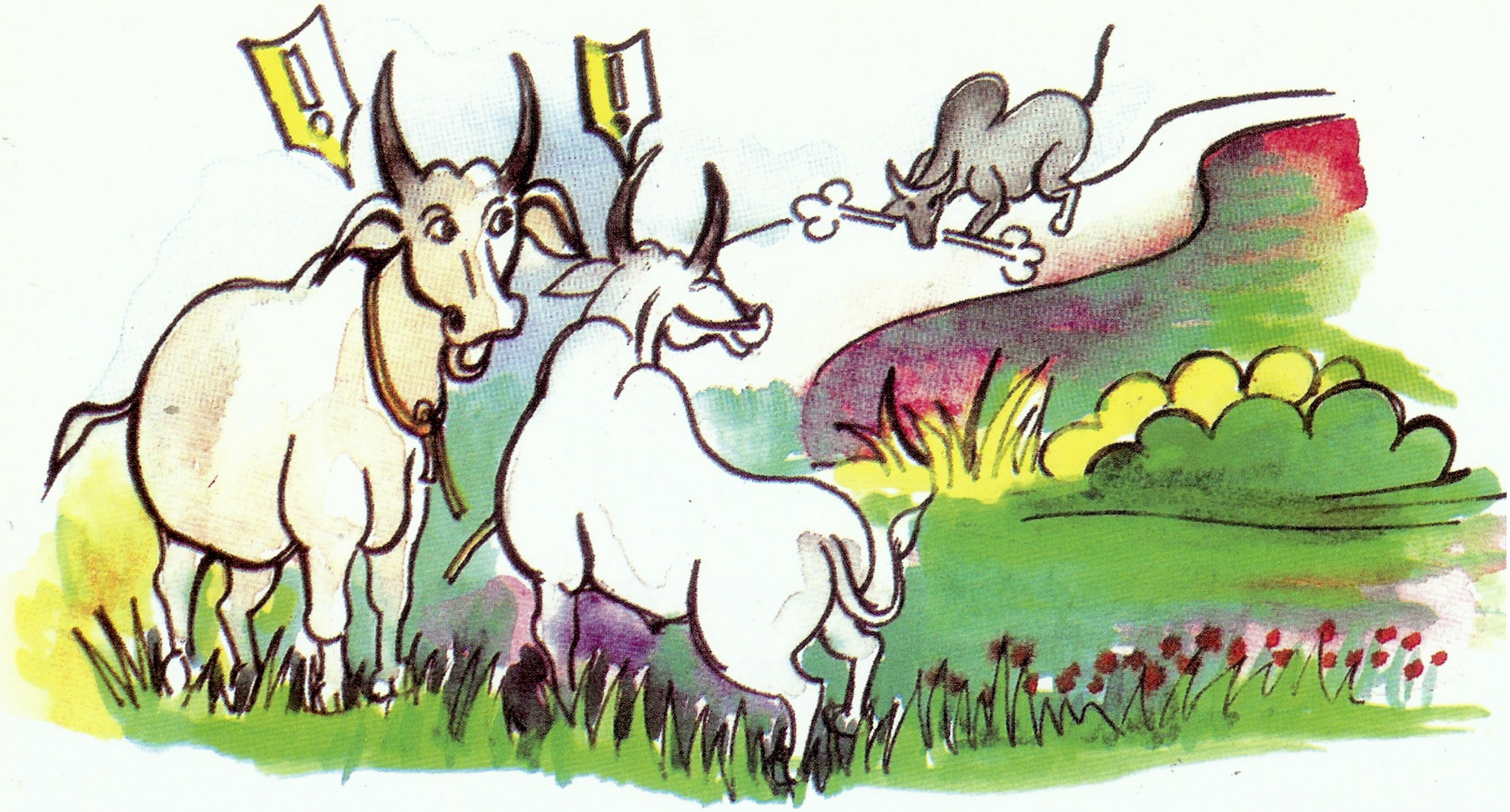
"तुम भी बेतहाशा भागे। वहीं उसे मार गिराना था।"

"उसे मार गिराते, तो दुनिया क्या कहती? वह अपना धर्म छोड़ दे, लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोड़ें?"

दोनों भूख से व्याकुल हो रहे थे। खेत में मटर खड़ी थी। चरने लगे। रह-रहकर आहट ले लेते थे, कोई आता तो नहीं है।

जब पेट भर गया, दोनों ने आज़ादी का अनुभव किया, तो मस्त होकर उछलने-कूदने लगे। पहले दोनों ने ढकार ली। फिर सींग मिलाये और एक-दूसरे को ठेलने लगे। मोती ने हीरा को कई कदम हटा दिया, यहाँ तक कि वह खाई में गिर गया। तब उसे भी क्रोध आया। सँभलकर उठा और मोती से भिड़ गया। मोती ने देखा-खेल में झगड़ा हुआ चाहता है, तो किनारे हट गया।





अरे! यह क्या? कोई साँड डौकता चला आ रहा है। हाँ, साँड ही है। वह सामने आ पहुँचा। दोनों मित्र बगलें झाँक रहे हैं। साँड पूरा हाथी है। उससे भिड़ना जान से हाथ धोना है; लेकिन न भिड़ने पर भी जान बचती नहीं नजर आती। इन्हीं की तरफ आ भी रहा है। कितनी भयंकर सूरत है।

मोती ने मूक-भाषा में कहा-- बुरे फँसे। जान बचेगी? कोई उपाय सोचो।

हीरा ने चिन्तित स्वर में कहा-- अपने घमण्ड से फूला हुआ है। आरजू-विनती न सुनेगा।

"भाग क्यों न चलें?"

"भागना कायरता है।"

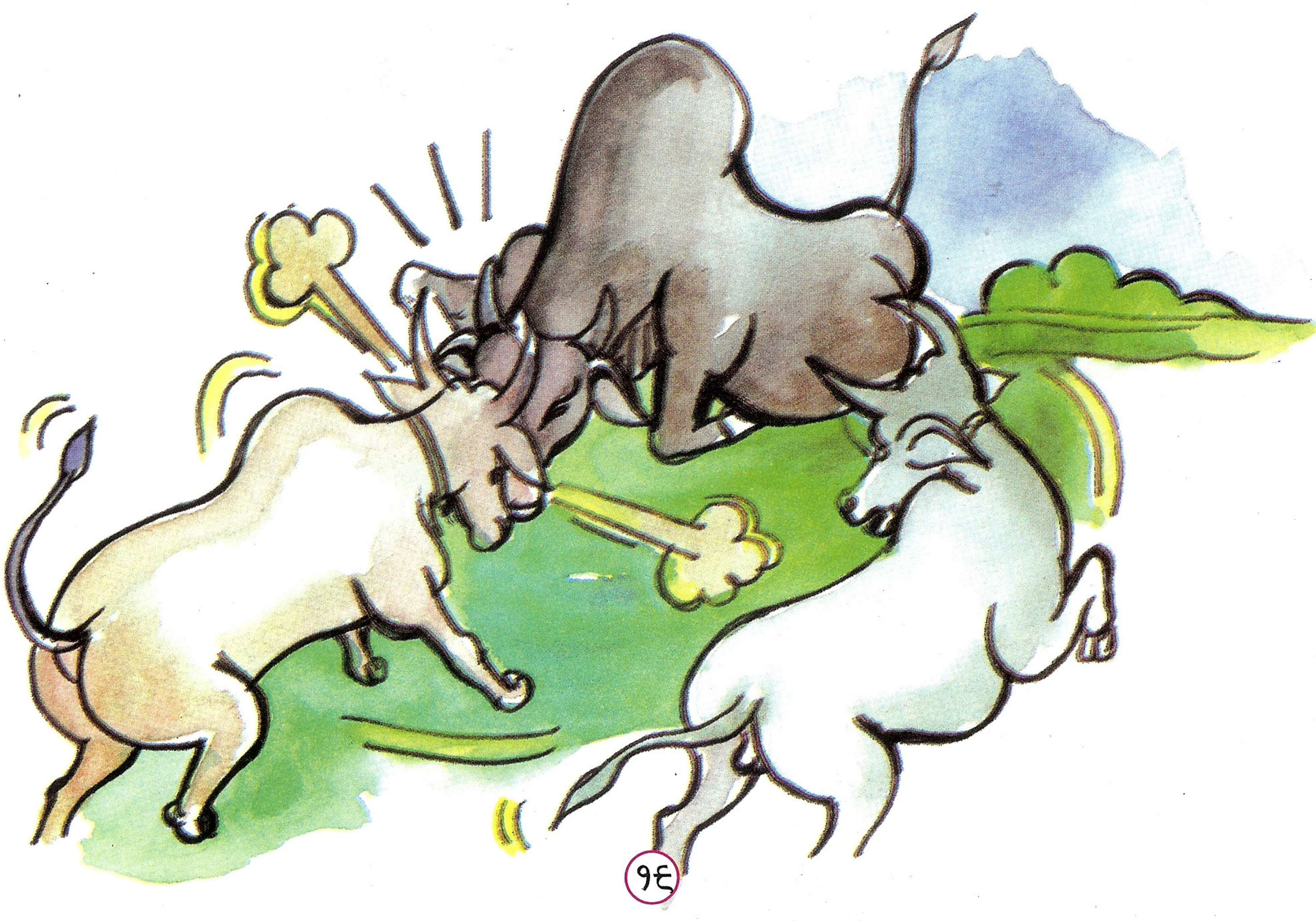
"तो फिर यहीं मरो। बन्दा तो नौ-दो-ग्यारह होता है।"

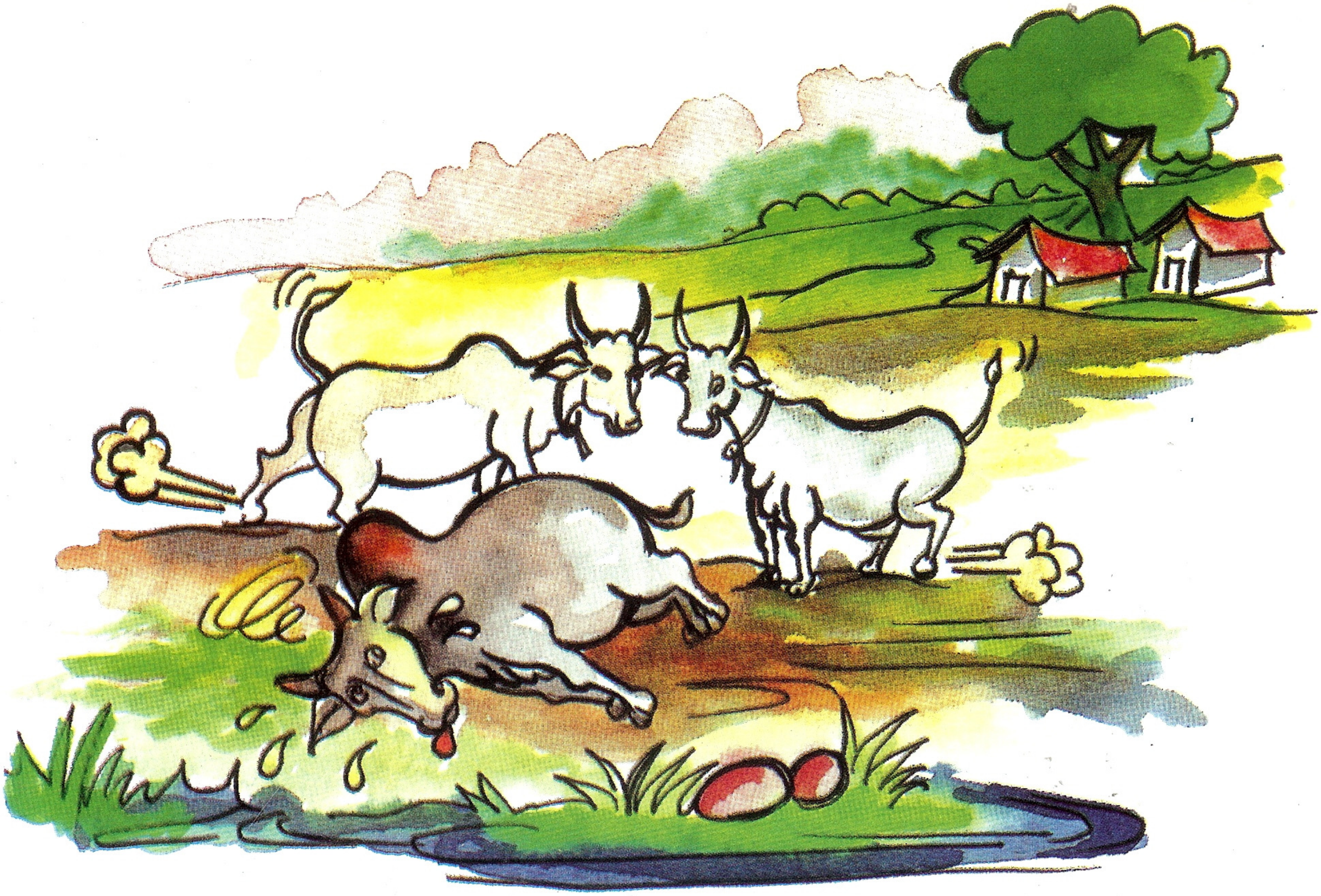
"और जो दौड़ाये?"

"तो फिर कोई उपाय सोचो जल्द!"

"उपाय यही है कि उस पर दोनों जने एक साथ चोट करें? मैं आगे से रगेदता हूँ, तुम पीछे से रगेदो, दोहरी मार पड़ेगी, तो भाग खड़ा होगा। मेरी ओर झपटे, तुम बगल से उसके पेट में सींग घुसेड़ देना। जान जोखिम है; पर दूसरा कोई उपाय नहीं है।"

दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके। साँड को संगठित शत्रुओं से लड़ने का तजरबा न था। वह तो एक शत्रु से मल्लयुद्ध करने का आदी था। ज्योंही हीरा पर झपटा, मोती ने पीछे से दौड़ाया। साँड उसकी तरफ मुड़ा, तो हीरा ने रगेदा। साँड चाहता था कि एक-एक करके दोनों को गिरा ले; पर ये दोनों भी उस्ताद थे। उसे अवसर न देते थे। एक बार झल्लाकर साँड हीरा का अन्त कर देने के लिए चला कि मोती ने बगल से आकर पेट में सींग भोंक दी। साँड क्रोध में





आकर पीछे फिरा तो हीरा ने दूसरे पहलू में सींग भोंक दी। आखिर बेचारा ज़ख़्मी होकर भागा और दोनों मित्रों ने दूर तक उसका पीछा किया। यहाँ तक कि साँड बेदम होकर गिर पड़ा। तब दोनों ने उसे छोड़ दिया। दोनों मित्र विजय के नशे में झूमते चले जाते थे।

मोती ने अपनी सांकेतिक भाषा में कहा-- मेरा तो जी चाहता था कि बच्चा को मार ही डालूँ।

हीरा ने तिरस्कार किया-- गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।

''यह सब ढोंग है। बैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर न उठे।''

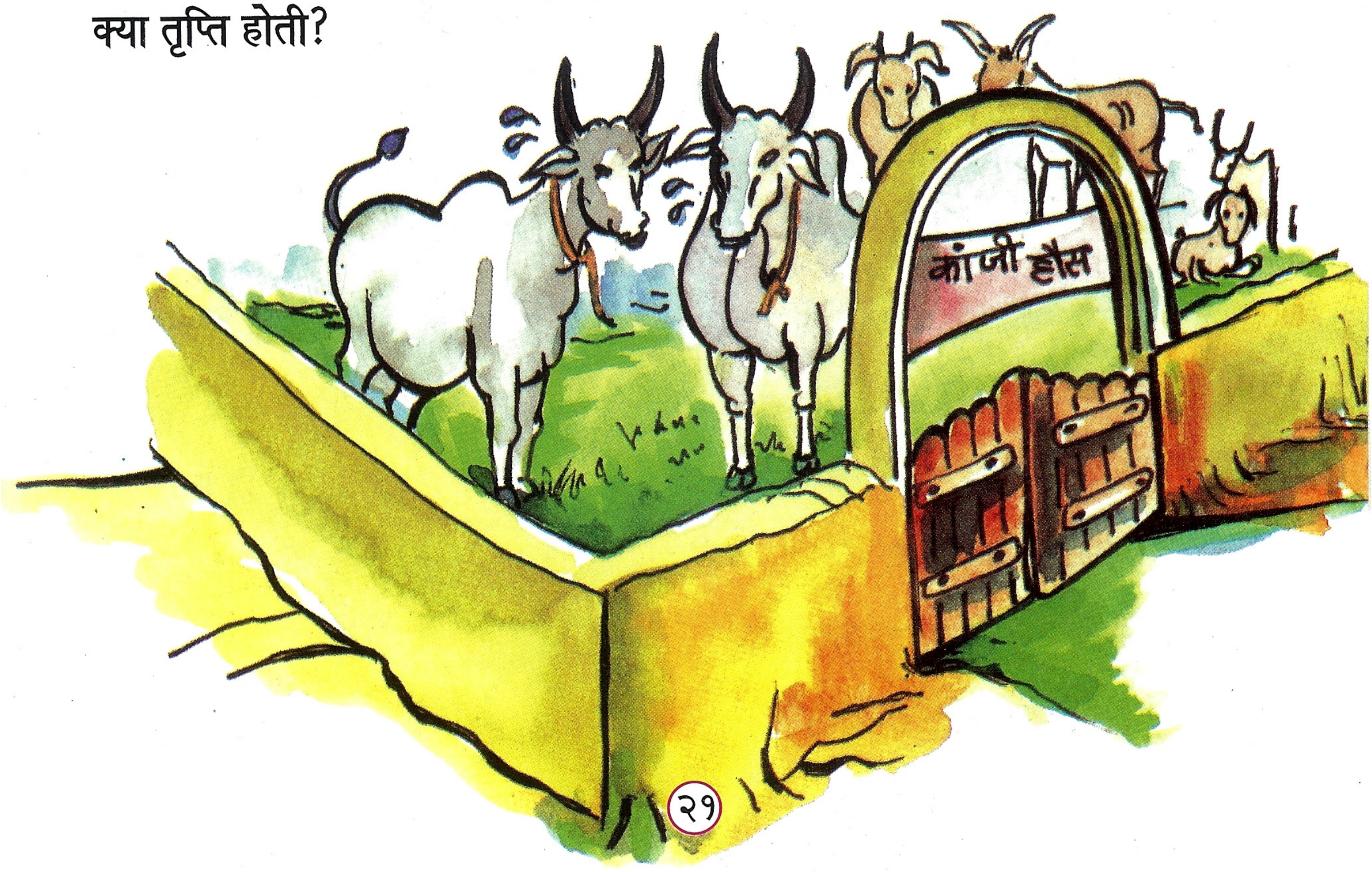
''अब घर कैसे पहुँचेंगे, वह सोचो।''

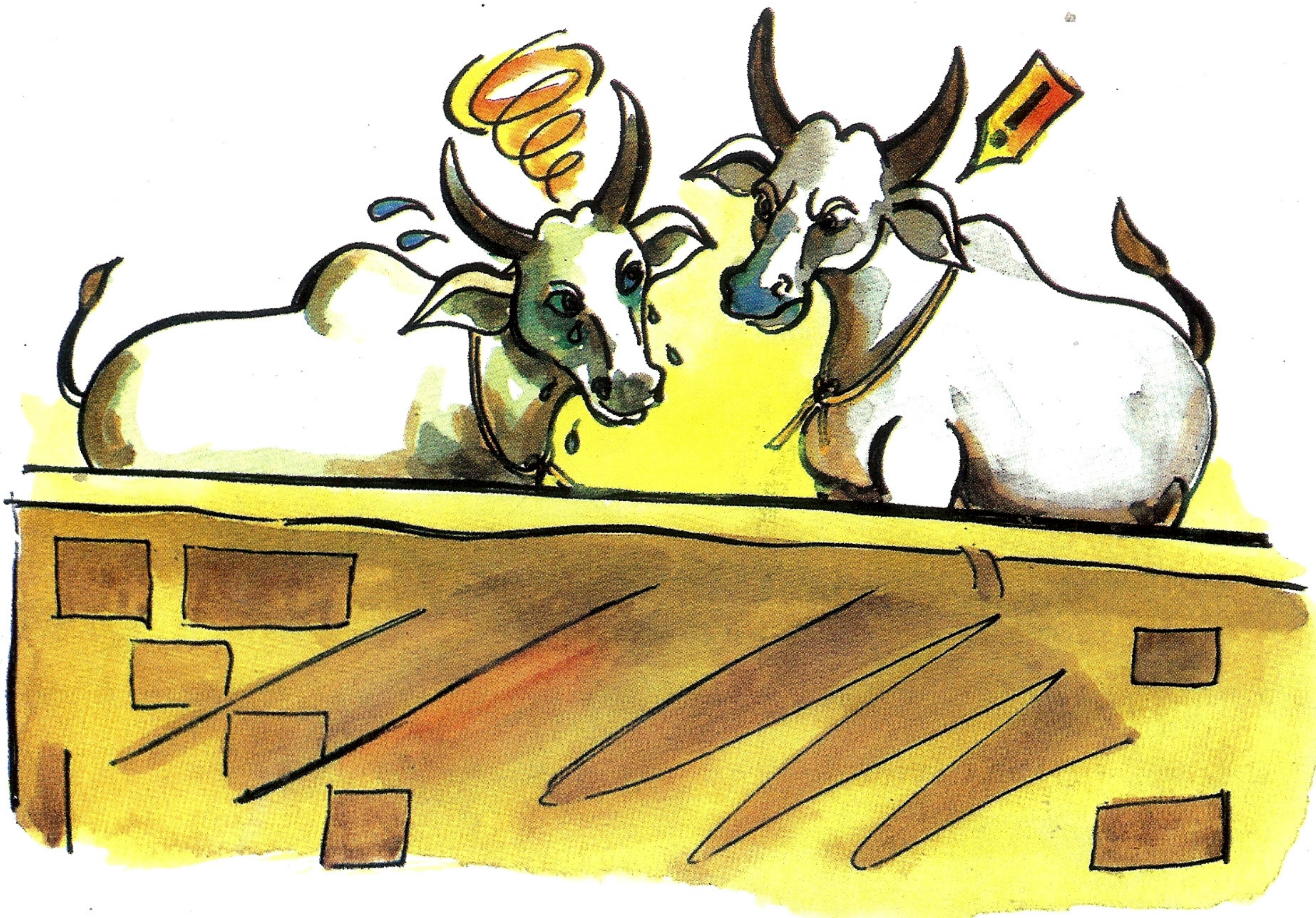
''पहले कुछ खा लें, तो सोचें।''

सामने मटर का खेत था ही। मोती उसमें घुस गया। हीरा मना करता रहा,

पर उसने एक न सुनी। अभी दो चार ही ग्रास खाये थे कि दो आदमी लाठियाँ लिये दौड़ पड़े, और दोनों मित्रों को घेर लिया। हीरा तो मेड़ पर था, निकल गया। मोती सींचे हुए खेत में था। उसके खुर कीचड़ में धँसने लगे। न भाग सका। पकड़ लिया गया। हीरा ने देखा, संगी संकट में है, तो लौट पड़ा। फँसेंगे तो दोनों फँसेंगे। रखवालों ने उसे भी पकड़ लिया। प्रातःकाल दोनों मित्र काँजीहौस में बन्द कर दिये गये।

दोनों मित्रों के जीवन में पहली बार ऐसा साबिका पड़ा कि सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ ही में न आता था, यह कैसा स्वामी है? इससे तो गया फिर भी अच्छा था। यहाँ कई भैंसे थीं, कई बकरियाँ, कई घोड़े, कई गधे : पर किसी के सामने चारा न था, सब ज़मीन पर मुरदों की तरह पड़े थे। कई तो इतने कमजोर हो गये थे कि खड़े भी नहीं हो सकते थे। सारा दिन दोनों मित्र फाटक की ओर टकटकी लगाये ताकते रहे; पर कोई चारा लेकर आता न दिखाई दिया। तब दोनों ने दीवार की नमकीन मिट्‌टी चाटनी शुरू की, पर इससे क्या तृप्ति होती?





रात को भी जब कुछ भोजन न मिला, तो हीरा के दिल में विद्रोह की ज्वाला दहक उठी।

मोती से बोला-- अब तो नहीं रहा जाता मोती!

मोती ने सिर लटकाये हुए जवाब दिया- मुझे तो मालूम होता है, प्राण निकल रहे हैं।

“इतनी जल्द हिम्मत न हारो भाई! यहाँ से भागने का कोई उपाय निकालना चाहिए।”

“आओ दीवार तोड़ डालें।”

“मुझसे तो अब कुछ नहीं होगा।”

“बस इसी बूते पर अकड़ते थे?”

“सारी अकड़ निकल गयी।”

बाड़े की दीवार कच्ची थी। हीरा मजबूत तो था ही, अपनी नुकीली सींगें दीवार में गड़ा दीं और जोर मारा, तो मिट्टी का एक चिप्पड़ निकल आया। फिर तो उसका साहस बढ़ा। इसने दौड़-दौड़कर दीवार पर चोटें कीं और हर चोट में थोड़ी-थोड़ी मिट्टी गिराने लगा।



उसी समय काँजीहौस का चौकीदार लालटेन लेकर जानवरों की हाजिरी लेने निकला। हीरा का उजापन देखकर उसने कई डण्डे रसीद किये और मोटी-सी रस्सी से बाँध दिया।

मोती ने पड़े-पड़े कहा-- आखिर मार खायी, क्या मिला,

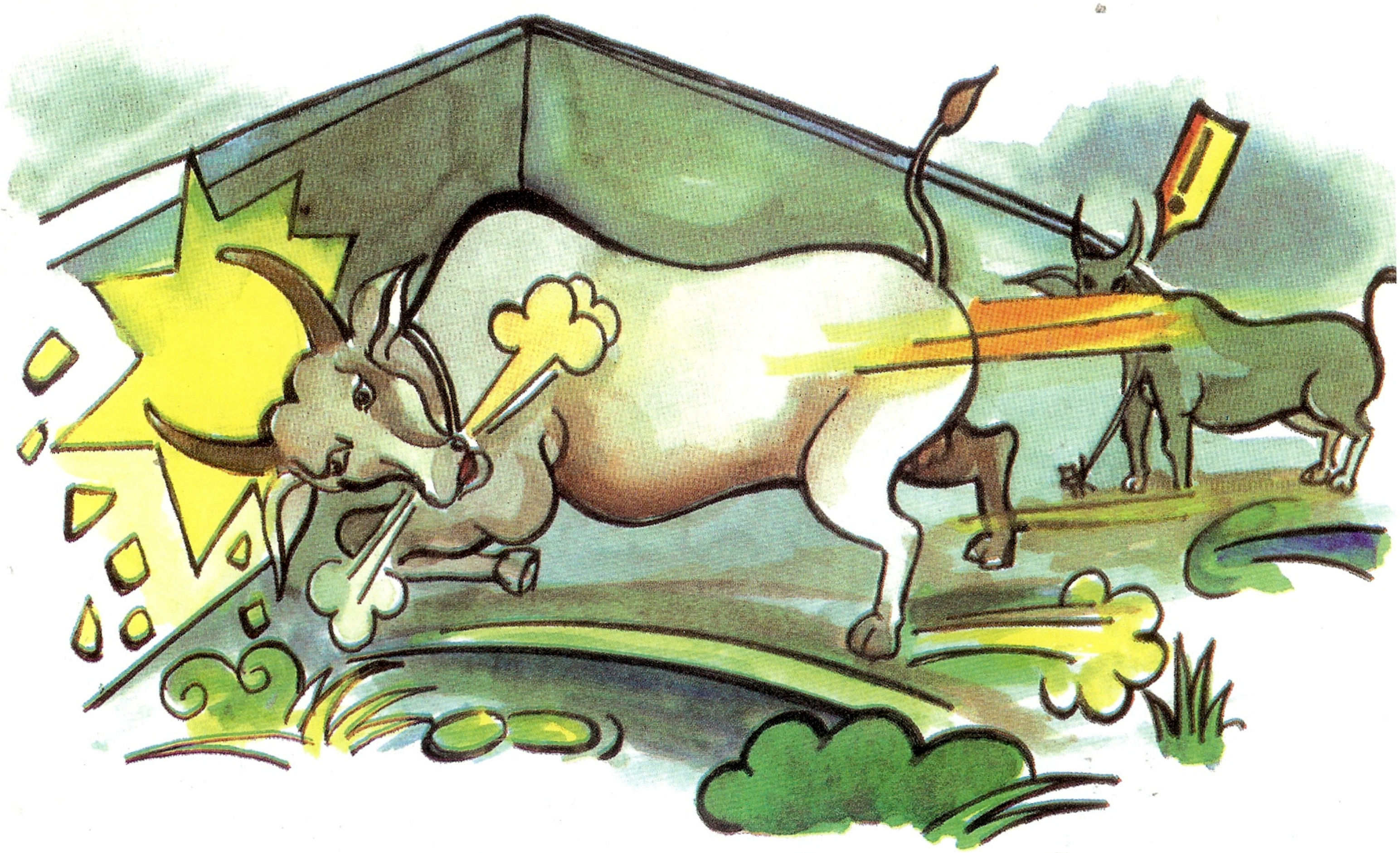
"अपने बूते-भर जोर तो मार दिया।"

"ऐसा जोर मारना किस काम का कि और बन्धन में पड़ गये।"

"जोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बन्धन पड़ते जायँ।"

"जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

"कुछ परवाह नहीं।



यों भी तो मरना ही है। सोचो, दीवार खुद जाती तो कितनी जानें बच जातीं। इतने भाई यहाँ बन्द हैं। किसी के देह में जान नहीं है। दो-चार दिन और यही हाल रहा, तो सब मर जायेंगे।''

''हाँ, यह बात तो है। अच्छा, तो ला, फिर मैं भी ज़ोर लगाता हूँ।''

मोती ने दीवार में उसी जगह सींग मारा। थोड़ी-सी मिट्टी गिरी और हिम्मत बढ़ी। फिर तो वह दीवार में सींग लगाकर इस तरह जोर करने लगा, मानों किसी प्रतिद्वन्द्वी से लड़ रहा है। आखिर कोई दो घण्टे की ज़ोर-आज़माई के बाद दीवार ऊपर से लगभग एक हाथ गिर गयी। उसने दूनी शक्ति से दूसरा धक्का मारा, तो आधी दीवार गिर पड़ी।

दीवार का गिरना था कि अधमरे-से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे। तीनों घोड़ियाँ सरपट भाग निकलीं। फिर बकरियाँ निकलीं। इसके बाद भैंसें भी खिसक गयीं; पर गधे अभी तक ज्यों-के-त्यों खड़े थे।

हीरा ने पूछा-- तुम दोनों क्यों नहीं भाग जाते?

एक गधे ने कहा-- जो फिर कहीं पकड़ लिये जायँ।

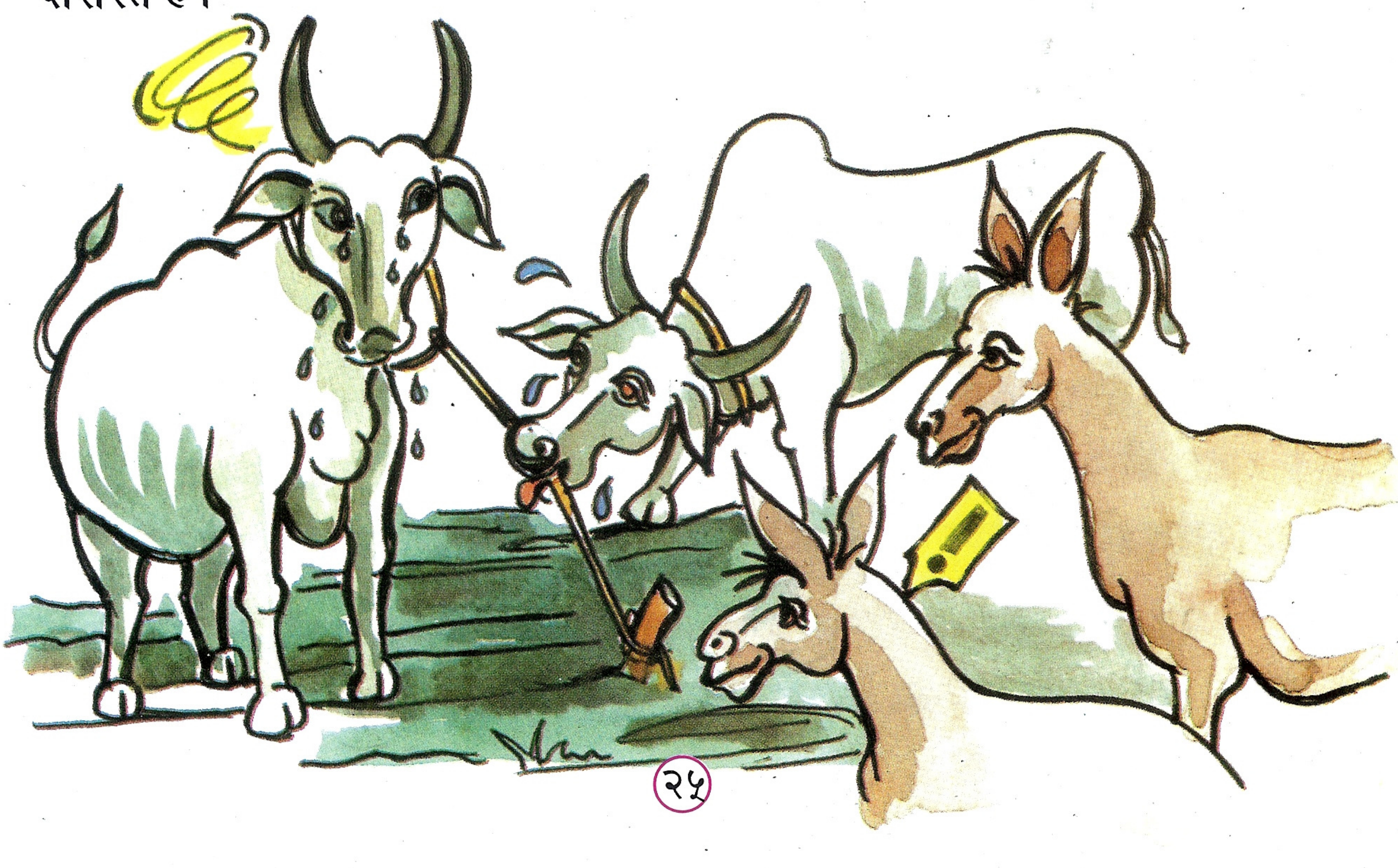
“तो क्या हरज है। अभी तो भागने का अवसर है।”

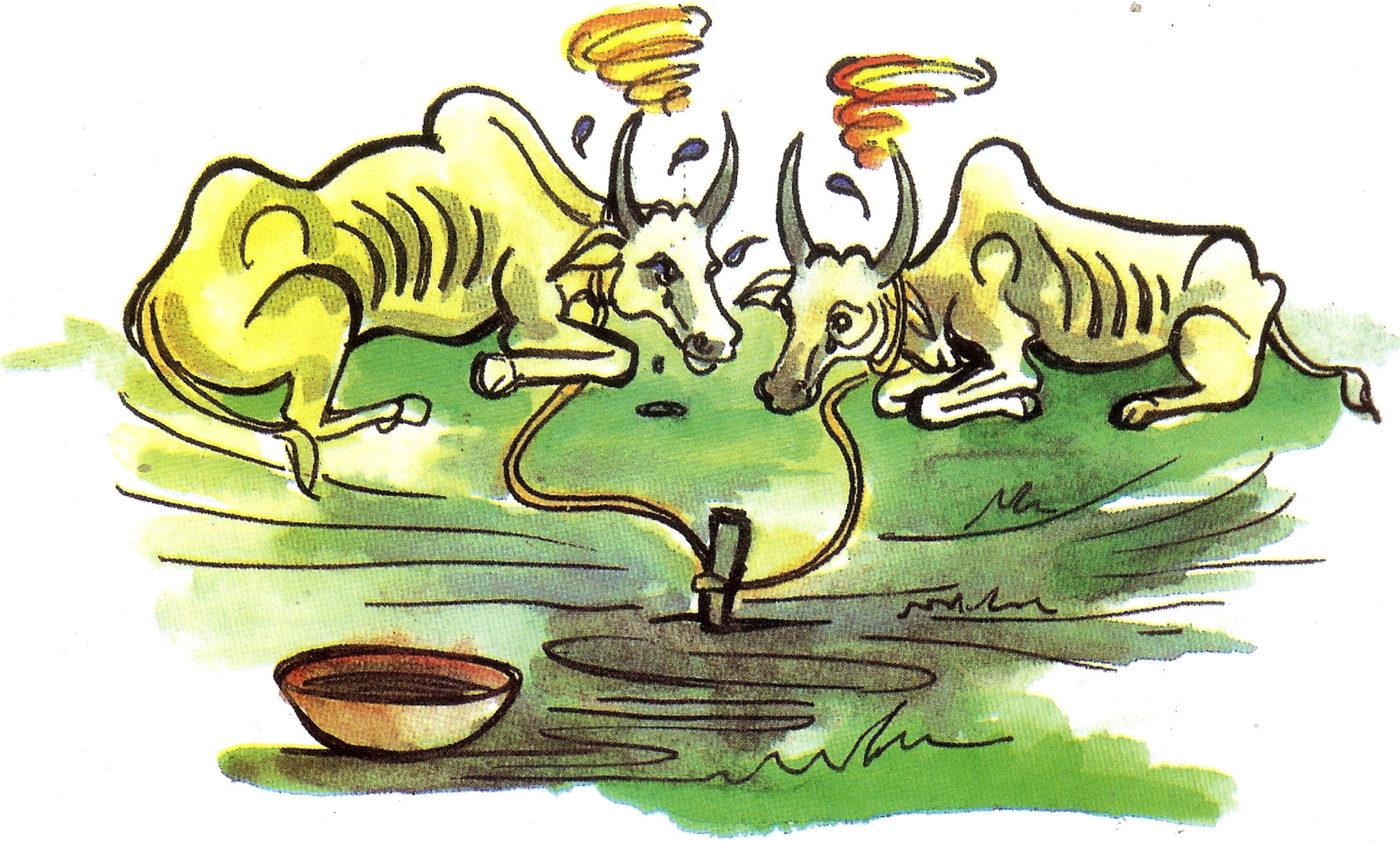
“हमें तो डर लगता है। हम यहीं पड़े रहेंगे।”

आधी रात से ऊपर जा चुकी थी। दोनों गधे अभी तक खड़े सोच रहे थे कि भागें या न भागें, मोती अपने मित्र की रस्सी तोड़ने में लगा हुआ था। जब वह हार गया, तो हीरा ने कहा-- तुम जाओ, मुझे यहीं पड़ा रहने दो। शायद कहीं भेंट हो जाय।

मोती ने आँखों में आँसू लाकर कहा-- तुम मुझे इतना स्वार्थी समझते हो, हीरा? हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे हैं। आज तुम विपत्ति में पड़ गये, तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊँ।

हीरा ने कहा-- बहुत मार पड़ेगी। लोग समझ जायेंगे, यह तुम्हारी शरारत है।





मोती गर्व से बोला-- जिस अपराध के लिए तुम्हारे गले में बन्धन पड़ा, उसके लिए अगर मुझ पर मार पड़े, तो क्या चिन्ता! इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गयी। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।

यह कहते हुए मोती ने दोनों गधों को सींगों से मार-मारकर बाड़े से बाहर निकाला और तब बन्धु के पास आकर सो रहा।

भोर होते ही मुंशी और चौकीदार तथा अन्य कर्मचारियों में कैसी खलबली मची, इसे लिखने की जरूरत नहीं। बस, इतना ही काफी है कि मोती की खूब मरम्मत हुई और उसे मोटी रस्सी से बाँध दिया गया।

एक सप्ताह तक दोनों मित्र वहाँ बँधे पड़े रहे। किसी ने चारे का एक तृण भी न डाला। हाँ, एक बार पानी दिखा दिया जाता था। यही उनका आधार था। दोनों इतने दुर्बल हो गये थे कि उठा तक न जाता था; ठठरियाँ निकल आयी थीं।

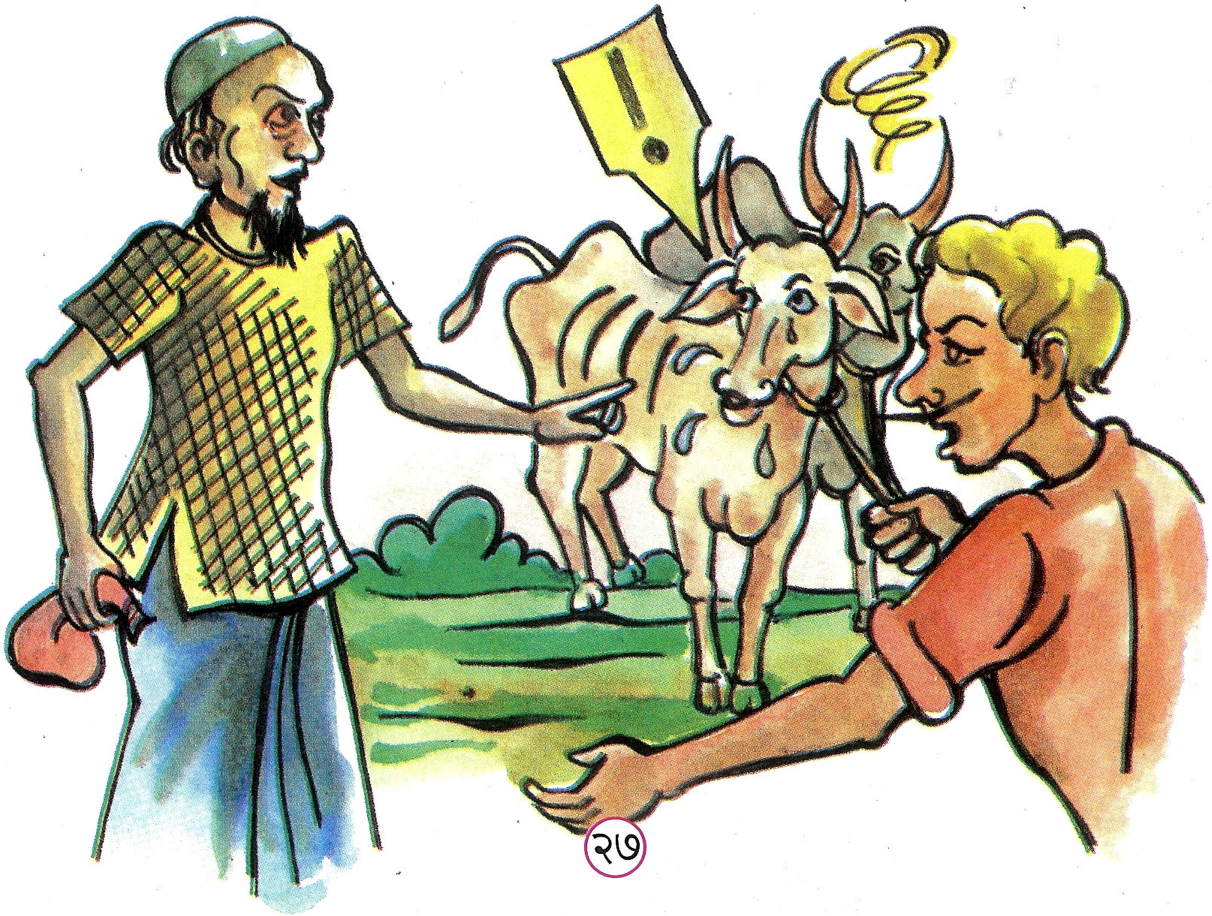
एक दिन बाड़े के सामने डुग्गी बजने लगी और दोपहर होते-होते वहाँ पचास-साठ आदमी जमा हो गये। तब दोनों मित्र निकाले गये और उनकी

देख-भाल होने लगी। लोग आ-आकर उनकी सूरत देखते और मन फीका करके चले जाते। ऐसे मृतक बैलों का कौन खरीदार होता?

सहसा एक दढ़ियल आदमी, जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यन्त कठोर, आया और दोनों मित्रों के कूल्हों में उँगली गोदकर मुंशीजी से बातें करने लगा। उसका चेहरा देखकर अन्तर्ज्ञान से दोनों मित्रों के दिल काँप उठे। वह कौन है और उन्हें क्यों टटोल रहा है, इस विषय में उन्हें कोई सन्देह न हुआ। दोनों ने एक-दूसरे को भीत नेत्रों से देखा और सिर झुका लिया।

हीरा ने कहा-- गया के घर से नाहक भागे। अब जान न बचेगी। मोती ने अश्रद्धा के भाव से उत्तर दिया-- कहते हैं, भगवान सबके ऊपर दया करते हैं। उन्हें हमारे ऊपर दया क्यों नहीं आती?

भगवान के लिए हमारा मरना-जीना दोनों बराबर है। चलो, अच्छा ही है, कुछ दिन उसके पास तो रहेंगे। एक बार भगवान ने उस लड़की के रूप में हमें बचाया था। क्या अब न बचायेंगे?





“यह आदमी छुरी चलायेगा। देख लेना।”

“तो क्या चिन्ता है? मांस, खाल, सींग, हड्डी सब किसी-न-किसी काम आ जायेगी।”

नीलाल हो जाने के बाद दोनों मित्र उस दढ़ियल के साथ चले। दोनों की बोटी-बोटी काँप रही थी। बेचारे पाँव तक न उठा सकते थे, पर भय के मारे गिरते-पड़ते भागे जाते थे; क्योंकि वह ज़रा भी चाल धीमी हो जाने पर जोर से डण्डा जमा देता था।

राह में गाय-बैलों का एक रेवड़ हरे-हरे हार मे चरता नजर आया। सभी जानवर प्रसन्न थे, चिकने, चपल, कोई उछलता था, कोई आनन्द से बैठा पागुर करता था। कितना सुखी जीवन था इनका; पर कितने स्वार्थी हैं सब। किसी को चिन्ता नहीं कि उनके दो भाई बधिक के हाथ पड़े कैसे दुःखी हैं।

सहसा दोनों को ऐसा मालूम हुआ कि यह परिचित राह है। हाँ, इसी रास्ते से उन्हें ले जाया गया था। वही खेत, वही बाग, वहीं गाँव मिलने लगे। प्रतिक्षण उनकी चाल तेज होने लगी। सारी थकान, सारी दुर्बलता गायब हो गयी। आह! यह तो! अपना ही हार आ गया। इसी कुएँ पर हम पुर चलाने आया करते थे; यही कुआँ है।

मोती ने कहा-- हमारा घर नगीच आ गया।

हीरा बोला-- भगवान की दया है।

''मैं तो अब भागता हूँ।''

''यह जाने देगा?''

''इसे मैं मार गिराता हूँ।''





"नहीं-नहीं, दौड़कर थान पर चलो। वहाँ से हम आगे न जायेंगे।"

दोनों उन्मत्त होकर बछड़ों की भाँति कुलेलें करते हुए घर की ओर दौड़े। वह हमारा थान है। दोनों दौड़कर अपने थान पर आये और खड़े हो गये। दढ़ियल भी पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था।

झूरी द्वार पर बैठा धूप खा रहा था। बैलों को देखते ही दौड़ा और उन्हें बारी-बारी से गले लगाने लगा। मित्रों की आँखों में आनन्द के आँसू बहने लगे। एक झूरी का हाथ चाट रहा था।

दढ़ियल ने जाकर बैलों की रस्सियाँ पकड़ लीं।

झूरी ने कहा-- मेरे बैल हैं।

"तुम्हारे बैल कैसे? मैं मवेशीखाने से नीलाम लिये आता हूँ।"

"मैं तो समझता हूँ चुराये लिये आते हो! चुपके से चले जाओ। मेरे बैल हैं। मैं बेचूंगा तो बिकेंगे। किसी को मेरे बैल नीलाम करने का क्या अख्तियार है?"

"जाकर थाने में रपट कर दूँगा।"

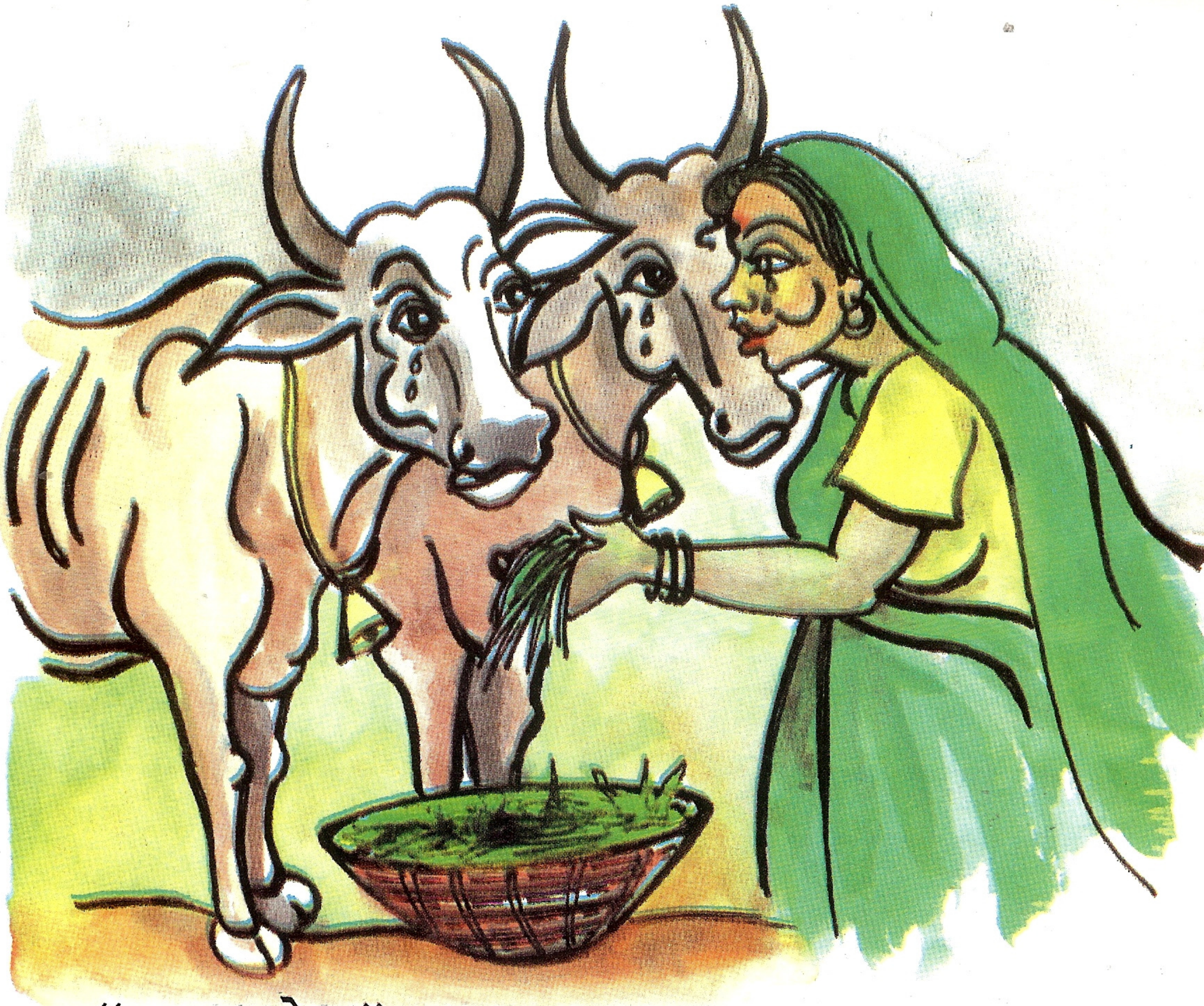
"मेरे बैल हैं। इसका सबूत यह है कि मेरे द्वार पर खड़े हैं।"

दढ़ियल झल्लाकर बैलों को जबरदस्ती ले जाने के लिए बढ़ा। उसी वक्त मोती ने सींग चलाया। दढ़ियल पीछे हटा। मोती ने पीछा किया। दढ़ियल भागा। मोती पीछे दौड़ा। गाँव के बाहर निकल जाने पर वह रुका; पर खड़ा दढ़ियल का रास्ता देख रहा था। दढ़ियल दूर खड़ा धमकियाँ दे रहा था, गालियाँ निकाल रहा था, पत्थर फेंक रहा था। और मोती विजयी शूर की भाँति उसका रास्ता रोके खड़ा था। गाँव के लोग यह तमाशा देखते थे और हँसते थे। जब दढ़ियल हारकर चला गया, तो मोती अकड़ता हुआ लौटा।

हीरा ने कहा-- मैं डर रहा था कि कहीं तुम गुस्से में आकर मार न बैठो।

"अगर वह मुझे पकड़ता, तो मैं बे-मारे न छोड़ता।"





''अब न आयेगा।''

''आयेगा तो दूर ही से खबर लूँगा। देखूँ, कैसे ले जाता है।''

''जो गोली मरवा दे?''

''मर जाऊँगा; पर उसके काम तो न आऊँगा।''

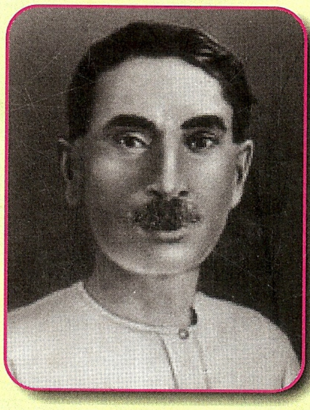
''हमारी जान को कोई जान नहीं समझता।''

''इसलिए कि हम इतने सीधे हैं।''

जरा देर में नाँदों में खली, भूसा, चोकर और दाना भर दिया गया और दोनों मित्र खाने लगे। झूरी खड़ा दोनों को सहला रहा था और बीसों लड़के तमाशा देख रहे थे। सारे गाँव में उछाह-सा मालूम होता था।

उसी समय मालकिन ने आकर दोनों के माथे चूम लिये। ✦✦





प्रेमचंद

जन्म : ३१ जुलाई, १८८० ई.। जन्म स्थान : बनारस से चार मील दूर लमही नामक गाँव। बचपन से ही संघर्षशील और स्वाध्यायी। प्राइवेट स्तर पर बी.ए. किया। अध्ययपन से जीविकोपार्जन प्रारंभ। शिक्षा विभाग में नौकरी करते हुए सब डिप्टी इंस्पेक्टर पद तक पहुँचे। १९२० में महात्मा गांधी से प्रेरित होकर सरकारी नौकरी का त्याग। इसके उपरान्त लेखन और सम्पादन से जीवनपर्यन्त निर्वाह। कुछ फिल्मों के लिए भी लिखा। मर्यादा, माधुरी, हंस व जागरण आदि का सम्पादन। जीवनकाल में ही उपन्यास सम्राट के रूप में प्रसिद्ध। उपन्यासों और कहानियों में आम जनजीवन के यथार्थ की प्रस्तुति। १९३६ में प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता। निधन : ८ अक्तूबर, १९३६।

उपन्यास : सेवासदन, प्रेमाश्रम, गबन, कायाकल्प, रंगभूमि, कर्मभूमि व गोदान। वरदान, प्रतिज्ञा, मनोरमा, रूठी रानी प्रारंभिक औपन्यासिक रचनाएँ।

कहानियाँ : लगभग ३०० कहानियाँ मानसरोवर के आठ भागों में प्रकाशित।

निबंध, नाटक, आलोचक, पत्र व अनुवाद कार्य भी महत्त्वपूर्ण।

पैंतीस रुपये

ISBN : 978-93-82175-72-8

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश
एवं
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ